बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

जनवरी, 1989

रु. 4.00

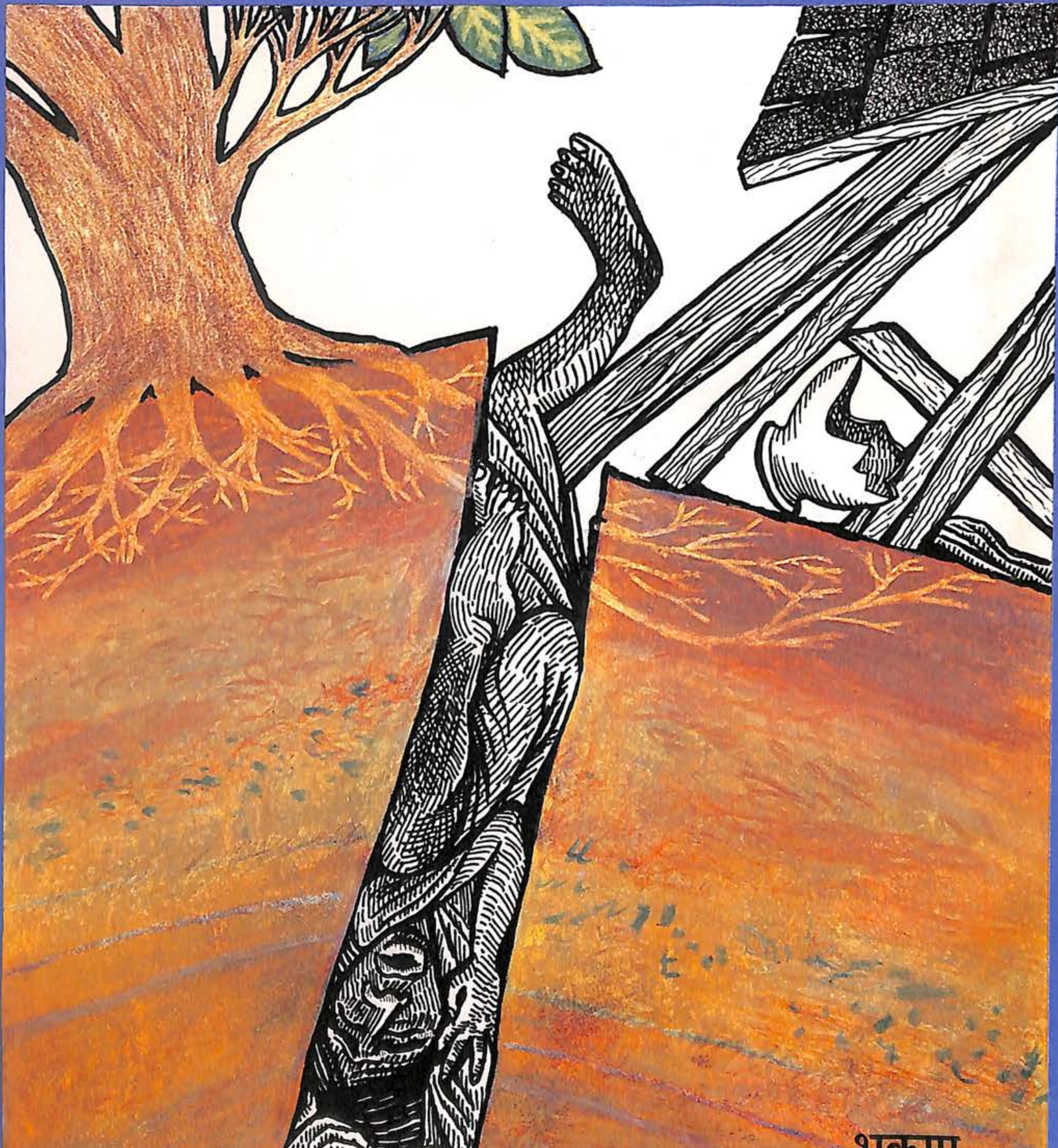

चित्र : सौरभ दीक्षित, छटवीं, मुरैना

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 4 अंक 7 जनवरी, 1989

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही

कला
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा
एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता :
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.).

कागज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद् (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

इस अंक में...

आपस की बात	*1*
पाठक लिखते हैं	*3*
मेरा पन्ना	*4*
क्यों कांपती है धरती	*9*
कहानी : कुकडूं कूं	*16*
कविता : मकड़ा और मक्खी	*17*
खतरा स्कूल : भाग-5	*20*
कहानी : एकदम ठीप है	*26*
अपनी प्रयोगशाला	*29*
कहानी : कट्टो गिलहरी	*31*
माथा पच्ची	*32*
धारावाहिक : नन्हा राजकुमार	*34*

आवरण : कैरन

आपस की बात

हर महीने जब हम चकमक को डाक में डालकर आते हैं तो मज़ाक में कहते हैं, 'चलो एक और बिटिया का ब्याह हो गया। विदा कर आए।' और यह सच भी है। हर अंक को तैयार कर, लाड़ से सजाकर जिस तरह तुम तक पहुंचाते हैं, वह किसी बिटिया की शादी करने से कम मशक्कत का काम नहीं है। पर इसका यह अर्थ नहीं है कि चकमक का अंक निकालने में हमें कोई बोझ महसूस होता है, उल्टे मज़ा आता है। भई, हम तो चाहते हैं कि इसी तरह समाज में भी बिटिया का जन्म या ब्याह बोझ नहीं माना जाना चाहिए।

एक और तरह से सोचते हैं तो लगता है हमारी चकमक बिटिया साढ़े तीन साल की हो गई है। और इस उम्र तक तो उसे अपने पैरों पर चलना सीख ही लेना चाहिए।

जो पाठक चकमक को उसके पहले अंक से जानते हैं, उन्हें उसकी पूरी कहानी मालूम है। हमें भी याद हैं वे दिन जब चकमक एक तरह से गर्भ में थी। पहला अंक तो जुलाई 85 में प्रकाशित हुआ था। पर उसकी तैयारी में आठ-दस महीने का समय तो अवश्य लगा था। कभी लगता चकमक शुरू हो पाएगी और कभी लगता बस यह मन में ही रह जाएगी। बीच में कुछ हितैषियों ने मदद के लिए हाथ बढ़ाए और फिर किसी कारण से खींच लिए। पर हमने कदम नहीं खींचे।

आखिर चकमक का प्रकाशन शुरू हो ही गया। मध्यप्रदेश के स्कूलों में चकमक पहले ही अंक से जाने लगी। इससे हमें बल मिला।

शुरू से ही हमने चकमक को व्यवसायिक लटके-झटकों से बचाए रखने की कोशिश की। और वैसे भी चकमक अव्यवसायिक पत्रिका है। मार्च 87 तक छपाई के लिए कागज़

खुले बाज़ार से खरीदते रहे। हालांकि यह चकमक के लिए बहुत घाटे का काम था। तीन रुपए दस पैसे में छपकर मिलने वाली पत्रिका हम पाठकों तक सिर्फ ढाई रुपए में पहुंचा रहे थे। यह संभव हुआ राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् (डी.एस.टी.) की सहायता से। फिर मदद मिली यूनीसेफ से—कागज़ की। यूनीसेफ के बारे में तो तुम जानते हो न! यूनीसेफ यानी संयुक्त राष्ट्र बाल कोष। यह दुनिया भर में बच्चों के कल्याण की योजनाओं, कार्यक्रम के लिए मदद

चित्र : इरफान बेग मिर्ज़ा, सातवीं, आगर छावनी

करता है। इस मदद के भरोसे हमने सोचा चकमक की कीमत घटाकर एक रुपए तक ले आएंगे। पर कुछ कोशिशों के बाद लगा कि यह तो शेखचिल्ली के सपने की तरह टांय-टांय फिस्स वाला मामला है। इस महंगाई के ज़माने में खर्चा कम करने के चक्कर में हमने चकमक में रंगों का इस्तेमाल तक कम कर दिया। यह एक तरह से किसी शिशु का दूध बंद करने जैसा ही था। पर इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा। अन्य खर्चे तो बढ़ते ही रहे।

फिर कुछ कोशिश की व्यवसायिक पत्रिकाओं की तरह खुले बाज़ार में उतरने की। पर अनाड़ी व्यापारी की तरह असफलता ही हाथ लगी। बुक स्टालों के एजेंटों ने कहा, 'कमीशन बहुत कम है, कमीशन बढ़ाओ।' अब तुम्हीं बताओ कहां से बढ़ाएं?

यूनीसेफ की मदद के पीछे एक स्पष्ट उद्देश्य है—चकमक अपने पैरों पर खड़ी हो जाए। और यह मदद बहुत सीमित समय के लिए है। आखिर में चकमक को यूनीसेफ की उंगली छोड़नी ही पड़ेगी। फिर क्या होगा? यह सवाल हमें दिन-रात सताता है। अब हम अधिक दिन इस सवाल से मुंह नहीं चुरा सकते।

इस सवाल के संदर्भ में ही हमें कुछ निर्णय ऐसे लेने पड़ रहे हैं जिन्हें लेने का मन बिलकुल नहीं है। पर कोई और रास्ता भी नहीं दिखता।

पहला निर्णय तो यह है कि अब चकमक में विज्ञापन भी लेने होंगे। बहरहाल... विज्ञापन लिए अवश्य जाएंगे। पर इसका मतलब यह नहीं है कि कोई भी विज्ञापन! विज्ञापन होंगे चकमक के तेवर के अनुरूप। चकमक की रचनाओं की तरह विज्ञापनों का चयन भी सावधानींपूर्वक होगा। इससे चकमक को अपने पैरों पर खड़े होने में मदद मिलेगी।

दूसरा निर्णय कड़वी दवा के समान है। जो बीमार होने पर पीनी ही पड़ती है। इस अंक से चकमक की **एक प्रति की कीमत चार रुपए** और **वार्षिक चंदा चालीस रुपए** कर रहे हैं। हां, डाकखर्च अब भी हम देंगे। जिन पाठकों का चंदा जनवरी, 89 के बाद तक है उन्हें अभी कोई अतिरिक्त राशि नहीं भेजनी है। जब उनका चंदा खत्म हो जाएगा, तो नया चंदा नई दर से देना होगा।

लगे हाथ एक और बात की चर्चा करना चाहेंगे। हमारे पास व्यवसायिक पत्रिकाओं की तरह साधन और सुविधाएं भी नहीं हैं। व्यवसायिक पत्रिकाओं का हर अंक आमतौर पर अपनी प्रकाशन तिथि से कम से कम दो माह पहले तैयार हो जाता है। पर चकमक तो गांव के किसी घर में चूल्हे पर बनती रोटी की तरह है। जहां एक ही समय में एक रोटी उरसे पर, एक तवे पर और एक दहकते अंगारों पर होती है। और तीनों को ही संभालना होता है। एक बिटिया को विदा करते ही दूसरी की विदाई का उत्सव शुरू होता है।

इस आपाधापी में तुम्हारी रचनाएं पढ़ना, पत्रों के जवाब देना, तुम्हारी डांट और धमकियां सुनना किन्ही लाल-पीली आंखों वाले गुरूजी के सामने खड़े होने से कम नहीं है। बहरहाल... उम्मीद है तुम्हारा प्यार और डांट हमें पहले की तरह ही मिलती रहेगी। तो यह रही हमारी 43वीं बिटिया!

नए साल की शुभकामनाएं उन सबको जो चकमक पढ़ते हैं और जो पढ़ेंगे।

खतरा; स्कूल : एक प्रतिक्रिया

चकमक सितंबर, 88 अंक से आप 'खतरा-स्कूल' दे रहे हैं। जो आज की शिक्षा, शिक्षण, शिक्षक का एक मनोवैज्ञानिक दर्पण है। इसे पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है ,आज शिक्षा एक जुए का खेल भर रह गया है। जिसमें सफल सुखद एवं स्वर्णिम जीवन की बहुतायत से समीष्टगत कोई गारंटी नज़र नहीं आती है।

अवसरवादी संपन्न एवं अधिकारी वर्ग इस शिक्षादेवी का लाभ ले पाता है। पता नहीं और पाठकों पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होती होगी! वैसे आपका यह विश्लेषण एक गहरा विश्लेषण है।

ऐसी स्थिति में शिक्षार्थी क्या करें? वैसे शिक्षा का उद्देश्य चिंतनधारा को अनावृत करना है, लेकिन आज स्मृति प्रशिक्षण रह गया है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि शिक्षा मानसिक विकास केलिए है। लेकिन आज सिर्फ डिग्री विकास के लिए शिक्षा जारी है।

इस तरह विद्यार्थी इस आपाधापी एवं विकृत शिक्षा के चंगुल में फंसकर जड़ एवं कुंठित हो जाता है। सारी ताज़गी खो बैठता है। जिस शिक्षा को वह तारणी समझता है वह उसके मस्तिष्क में बोझ बन जाती है।

कृपया खतरा : स्कूल के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के साथ-साथ उसका समाधान भी प्रस्तुत करें।

इस पहलू में सभी विज्ञ लोगों को एक परिपक्व आधार शिला रखनी होगी, अन्यथा शिक्षा वरदान की जगह अभिशाप बन जाएगी।

□ **महेश प्रसाद जोशी, कपुरदा, छिंदवाड़ा**

पसंद आई आतिशबाज़ी

अक्टूबर का अंक देखा-पढ़ा बेहद भाया। 'आतिशबाज़ी' लेख बहुत रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगा। कृपया ऐसे ही ज्ञानवर्द्धक एवं सम सामयिक लेखों को आप प्रमुखता दिया करें।

'जलने पर क्या करें'—हमें बहुत उपयोगी लगा। दुर्घटना होने पर हम पाठक दुर्घटना की गंभीरता को अब भली भांति समझ सकते हैं।

'कौन कहां का?' लेख बेहद रुचिकर शैली में लिखा गया है। ऐसे यदि अन्य वस्तुओं के विषय में भी प्रकाशित हो तो चकमक की चमक और बढ़ जाएगी।

पाठक लिखते हैं

वृक्ष मानव का चुनाव भी हृदयस्पर्शी था। चित्रकला के विषय में भी यदि आधारभूत बातें जया दीदी बतायें-लिखें तो बहुत अच्छा रहेगा—जैसे मूर्तिकला के विषय में दो अंकों से लिख रही हैं।

इस बार की वर्ग पहेली बहुत सरल है कृपया कठिन बनाया करें।

□ **अशोक, राजू, देवीसिंह, सुनवाहा बेगमगंज, रायसेन**

अक्टूबर माह में "जलने पर क्या करें!" पसंद आया। कहानी वृक्ष मानव भी लाजवाब थी।

□ **अमिताभ नामदेव,सालीबाड़ा, बरेला**

चकमक का अक्टूबर अंक पसंद आया। आतिशबाजी, कहानी : वृक्षमानव, जलने पर क्या करें? इत्यादि बहुत अच्छे लगे। माथापच्ची के अंतर्गत वर्ग पहेली को हल करने में विशेष आनंद आता है।

□ **लक्ष्मणसिंह क्षत्री, सारबहरा, पेन्ड्रारोड़, बिलासपुर**

मैंने पत्रिका पहली बार पढ़ी। मुझे पत्रिका काफी रोचक व ज्ञानवर्द्धक लगी। सितंबर अंक में प्रकाशित गिजुभाई की कलम से बहुत अच्छा लगा। इस पत्रिका में अन्य पत्रिकाओं की तरह नकल नहीं की गई है। तथा बच्चों के विचारों एवं भावों को लाने का भरसक प्रयास किया गया है।

□ **ब्रह्मदेव शर्मा, आठवीं, लखनऊ**

वैज्ञानिक रामन के बारे में सरल-सरस शैली में लिखी विस्तृत जानकारी पढ़ कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। बधाई! गिरिजा कुलश्रेष्ठ की कहानियों ने बालकों के मन की भावनाओं से परिचित कराया। लेख "कान की कहानी" अच्छी लगी। पूरी पत्रिका संग्रहणीय है।

□ **मुकेश स्वर्णकार, बलौदा, बिलासपुर**

एक बार मेरे हाथ चकमक पत्रिका लगी। पहले तो मैंने इसे साधारण पत्रिका समझकर कोई ध्यान नहीं दिया। किंतु फरवरी, 88 के अंक में 'भारत जन विज्ञान जत्था' और नीचे बाएं एक बच्ची के साथ में दूरबीन के समान बच्चों की वस्तु का चित्र देखकर मेरे मन में इस पत्रिका के प्रति उत्सुकता जागी और मैंने इसे पढ़ा। चूंकि मैं साइंस का विद्यार्थी हूं इसलिए मुझे इसका साइंस वाला भाग बहुत ही अच्छा लगा। बाकी सभी स्तंभ भी अच्छे हैं।

□ **मनीष कुमार ठाकुर, बड़वानी**

'रामन' क्यों?

नवम्बर का अंक मिला। इस अंक का मुख्य आकर्षण है 'वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकट रामन'। जैसे 'चंद्रशेखर' को हम अंग्रेजी उच्चारण पद्धति के अनुसार 'चंद्राशेखरा' नहीं लिखते हैं; उसी तरह भारतीय मूल के 'व्यंकट रमण' को हम 'वेंकट रामन' क्यों लिखें? जैसे हिंदी में हम मिश्र, शुक्ल, गुप्त लिखते हैं, ये ही इन शब्दों के शुद्ध उच्चारण हैं, मिश्रा, शुक्ला, गुप्ता नहीं। ये तो अंग्रेजी के भक्तों की अपनी गलत नकलें हैं। उसी तरह हम अपने 'व्यंकट रमण' को, 'वेंकट रामन' क्यों लिखें और नई पीढ़ी के अपने पाठकों के सामने भाषा के गलत उपयोग का उदाहरण क्यों रखें? अंग्रेजी के गलत प्रभाववाले वातावरण से हम अपने किशोर पाठकों को दूर ही रखें, तो अच्छा हो।

□ **काशिनाथ त्रिवेदी, इंदौर**

माह नवंबर के मुखपृष्ठ पर आपने बेहतरीन 'लैंड स्केप' छापा है। मैं इसका एक बड़ा सा पोर्टेट तैयार करवा कर अपने ड्राइंगरूम में लगवा रहा हूँ।

□ **अब्दुल सलाम 'कौसर', राजनांदगांव**

नवम्बर, 88 अंक पढ़ा। पढ़कर कई ऐसी बातों का ज्ञान हुआ जो जीवन में उपयोगी होंगी। पत्रिका का पृष्ठ पलटते ही वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरामन का जीवन परिचय मिला। इसका प्रस्तुतीकरण इतना आकर्षक था कि जब तक लेख पूरा आत्मसात् नहीं कर गए चैन नहीं लिया। इतनी ज्ञानवर्द्धक और उपयोगी जानकारी कहानी जैसे माध्यम में प्रस्तुत कर आपने एक अनुकरणीय मिसाल कायम की। बच्चे भी सरलता से पढ़ गए। बीच-बीच में "दफ्तर से घर, घर से दफ्तर बस यही बेमतलब की चक्की", "ज़रा सोचो तो क्या हालत हुई होगी झूठी चुगली करने वालों की" का समावेश शैक्षिक पहलू लिए था। साहसी सोमवती का इंटरव्यू भी प्रेरणाप्रद महसूस हुआ। 'इंतज़ार' और 'कहानी कान की' ज्ञानवर्द्धक रहीं।

□ **किशोरीलाल गुप्ता, शिक्षक, मड़देवरा, शाहगढ़**

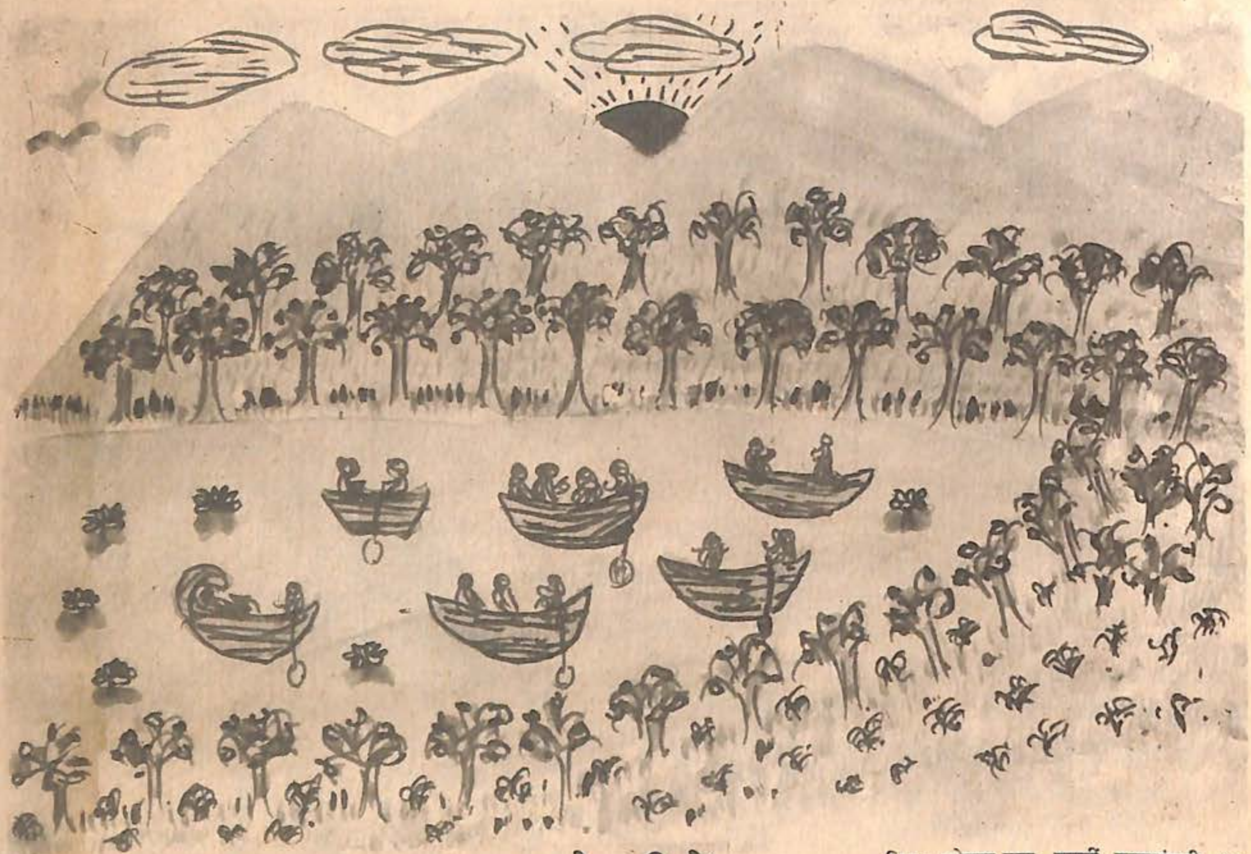

चित्र : कोमल साहू, दसवीं, फूलगांवड़ी, धार

ये झीलें

इन झीलों में जैसे आसमान उतर आया है
नूरे वतन, नूरे जहां इसमें समाया है!
ठंडी बहती शीतल हवा
मुसाफिर से कहती रुक ज़रा
देख आफताब उभर आया है!

देख प्रकृति यह सौंदर्य बिखरा रही है,
जा, जा वह तुझे बुला रही है,
पर्वतों की दिवारी में,
जैसे प्रकृति को बोया है बनवारि ने,
ये पेड़ों के साये कहां से आए,
ये पर्वत अभी इस झील में नहाया है,
इन झीलों में जैसे आसमान उतर आया है!

□ उपासना त्रकरू, 14 वर्ष, दिल्ली

बगीचे में बंदर

हमारे गांव में एक बहुत बड़ा बगीचा था। उसमें बहुत से बंदर रहते थे। तो एक दिन हमको हमारे गांव के लोगों ने बतला दिया कि ठाकुर दादा के बगीचा में बहुत से बंदर रहते हैं।

तो एक दिन हम बहुत से लड़के बंदरों को देखने के लिए गए। तो ठाकुर दादा ने हमसे कहा कि, तुम इधर क्यों आए हो? तो हमने कहा कि, ठाकुर दादा हम इतने लड़के बंदर देखने के लिए आए हैं।

तुम हर दिन बंदर देखते रहते हो तो क्या हम नहीं देख सकते। ठाकुर दादा ने कहा कि, तुम पूरे लड़के इधर से भाग जाओ। हमने कहा कि, ठाकुर दादा हम नहीं भागेंगे। तो ठाकुर दादा हमको गाली देने लगा। हमने कहा, गाली मती देना। ठाकुर दादा ने कहा कि, खड़े रहो। तो हम गुल्ला मारने लगे। ठाकुर दादा ने कहा कि, गुल्ला मती मारो। तो हमने गुल्ला नहीं मारे।

ठाकुर दादा हमको पीट कर कहने लगा कि, इहां से चले जाओ। उसने हमारे घरकों (घरवाले) से कह दिया। तो हमें हमारे घरकों ने मारा तो हम दूसरे दिन बगीचा में गए। वहां हमको ठाकुर दादा मिल गया। तो ठाकुर दादा बोला, कायरे तुम फिर आ गए। तो हम बोले, मारो रे। तो पूरे जने मारने लगे। तो ठाकुर दादा ने कहा, अब मत मारो। तो हमने मारना बंद कर दिया।

फिर उसने हमको साथ ले जाकर बंदर दिखलाए और एक-एक केला खिलाए। तो हमने कहा, बारे ठाकुर अच्छा स्वाद आया। हम लड़कों में से एक लड़का केला छिलका सहित खा गया। तो वह बोला, इसमें कुछ स्वाद नहीं आया। ठाकुर दादा ने कहा, तुमने छिलका सहित खा लिया, इसलिए तुमको स्वाद नहीं आया। तो वो बोला, ठाकुर दादा एक केला और दो। ठाकुर दादा ने एक केला नीछकर (छीलकर) दे दिया। तो वो बोला, दादा इसमें तो अच्छा स्वाद आया। तो हम खूब हंसे।

☐ राजेन्द्र बैरागी, सातवीं, सुरेला रंधीर, पिपरिया

जुंआ की कहानी

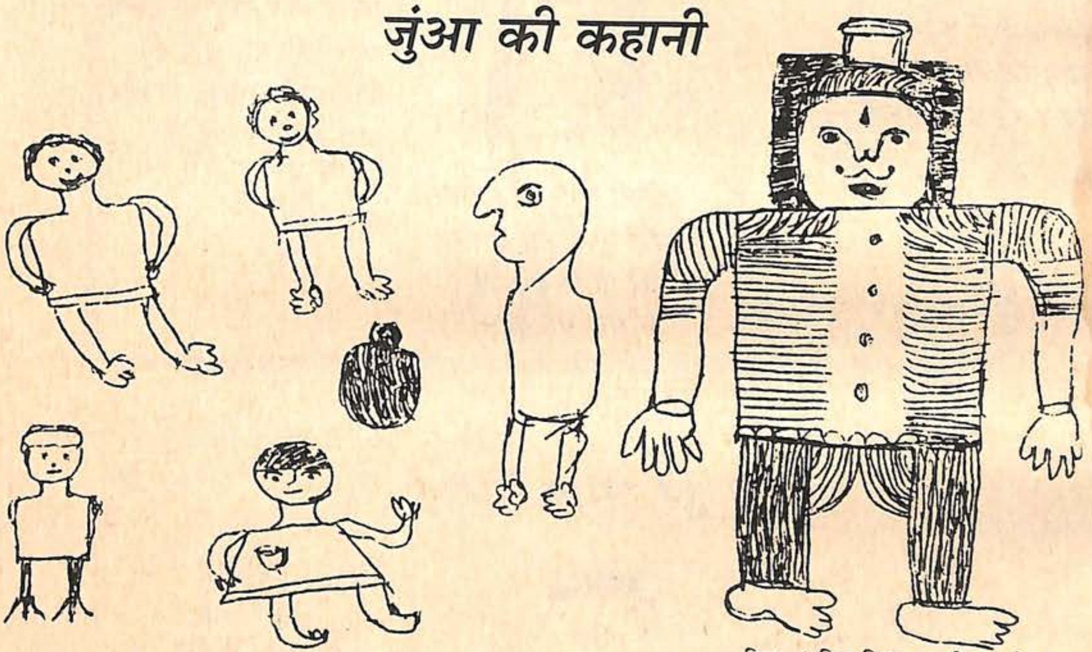

चित्र : अनिल मिश्रा, छटवीं, आलोट पायगा, देवास

जुन्हैटा में जुंआ हो रहा था। 50 पैसे बाजी हो रही थी। उधर से ढोर डाक्टर आ गए। वे बोले, गौरी मन्ना खेलो। मन्ना में राजेन्द्र की ताश चल गई। उधर से मदन, सुक्का, गुल्लू, सुम्मा आ गए। इतने में मदन ने पांच रुपए 3 पर डाल दिए। उधर से रम्मू आए उन्होंने भी पांच रुपए डाल दिए। 3 पर 10 रुपए हो गए।

राजेन्द्र ने कहा, मैं दो रुपया मानूंगा। गौरी ने कहा मैं आठ रुपया मानूंगा। राजेन्द्र ने 3 को अंदर किया। उधर से भगवान दास महाराज बोले हमारे लिए 5 रुपये की नाल कट्टो। मेरी ताश है। इतने में महाराज और टोपी वाले दादा में लड़ाई होने लगी। महाराज ने कहा कि इधर से उठ जाओ नहीं तो पत्ता फाड़ता हूं।

राजेन्द्र ने कहा कि अभी 5 रुपये की नाल कट्टी थी। गौरी और सुक्कू की लड़ाई होने लगी। अभी 5 रुपये डाले थे तो तुमने मान लिए थे, दीक्षित ने कहा। उन्होंने दस रुपये डाल दिए गुल्लू ने पांच रुपये डाल दिए। गुल्लू गौरी से बोला अब क्या नहीं मान रहा कान में दो चार जूता मारता हूं।

इतने में गौरी ने सिपाही को देख लिया। सब लोग भाग गए। महाराज बोरे के नीचे पैसे देखने लगे। 25 रुपया मिल गए। सिपाही ने महाराज को पकड़ लिया। महाराज ने पसीना छोड़ दिया। सिपाही ने कहा क्या यहां पत्ते होते हैं। महाराज लाल आंख करके भागमल की ओर देख रहा था। भागमल ने कहा हां जी होता है। सिपाही ने महाराज को तीन चार बेंत सटकार दये। इस पर अरुण बोला साहब जी मर जाएगा छोड़ दो। सिपाही उसको हथकड़ी डालकर थाने ले गया।

☐ कोमल साहू, जुन्हैटा (बालचिरैया)

रोल

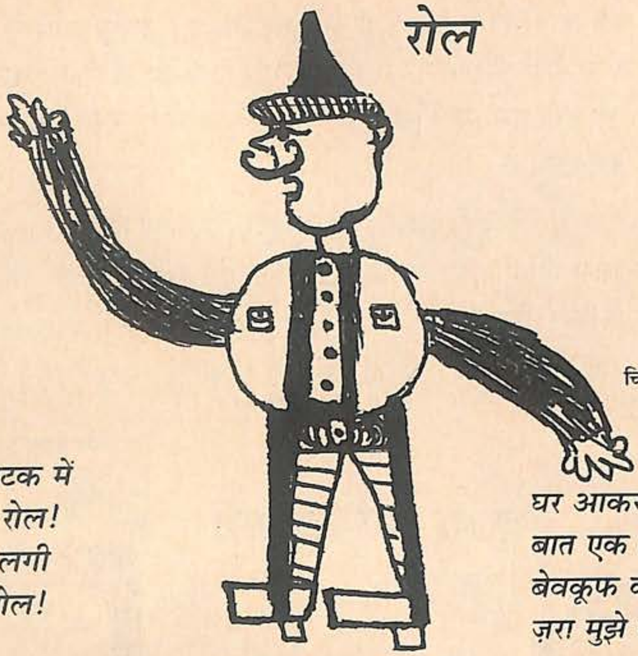

चित्र : उत्तम गुप्ता, छटवीं, रामनगर

विद्यालय के नाटक में
मिला मूर्ख का रोल!
सोनू को चिंता लगी
खुल ना जाए पोल!

घर आकर दीदी से बोला
बात एक बतलाओ!
बेवकूफ का पाठ हो कैसा
ज़रा मुझे समझाओ!

बोली दीदी सोनू भैया
नहीं तुम्हें कुछ करना!
जैसे हो वैसे के वैसे
जा मंच पर चढ़ना!

□ घनश्यामसिंह राजपूत, इटारसी

हर जगह पिटाई

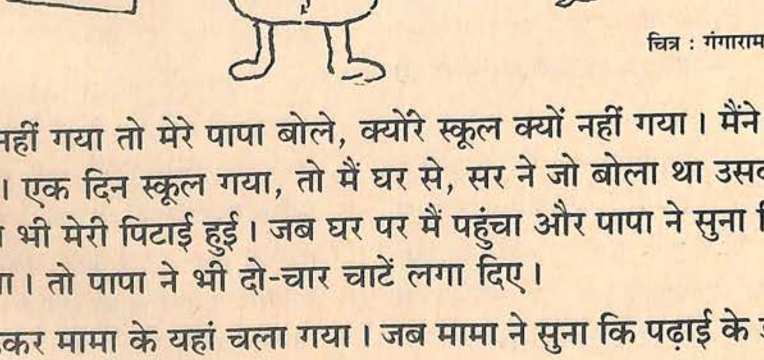

चित्र : गंगाराम कहार, चौथी, पिपरिया

एक दिन मैं स्कूल नहीं गया तो मेरे पापा बोले, क्योंरे स्कूल क्यों नहीं गया। मैंने कहा स्कूल में मेरी पिटाई होती है। एक दिन स्कूल गया, तो मैं घर से, सर ने जो बोला था उसको याद करके नहीं गया। उस दिन भी मेरी पिटाई हुई। जब घर पर मैं पहुंचा और पापा ने सुना कि इसका मन पढ़ाई में नहीं लगता। तो पापा ने भी दो-चार चाटें लगा दिए।

मैं गांव छोड़कर मामा के यहां चला गया। जब मामा ने सुना कि पढ़ाई के डर से भागकर आया हूं तो मामा ने भी मुझे मार कर भगा दिया।

□ शान्तीलाल, 8वीं, मानकुंड, देवास
(बालकलम)

अदल-बदल

चित्र : अमित, सातवीं, भौंरासा, धार, देवास

गर्मियों की छुट्टी में मैं मामा की लड़की की शादी में खंडवा गया था। मैं वहां थोड़ी देर घूमा, फिर बारात आ गई। हम सब दूल्हे को देखने दौड़ पड़े। फिर थोड़ी देर बाद नाश्ता करवाया गया। फिर शरबत पिलाया।

शाम को खाना खाया गया। खाने में बहुत-सी स्वादिष्ट चीज़ें बनी थीं। हमने खाना डटकर खाया और छत पर मस्ती करने लगे।

फिर लगन (भावर) का समय आया। लगन में दूल्हा-दुल्हन के फेरे पड़े। दूल्हा अच्छा था। उसने कोई ज़िद नहीं की।

फिर हम सो गए। मैं जब सवेरे उठा तो पता चला मेरी चप्पल नहीं है। मैंने इधर-उधर ढूंढी पर नहीं मिली। मैं नंगे पांव वापस आ रहा था। मेरे साथियों ने देखा तो एक बोला, "अरे यार तू भी किसी की चप्पल मार दे।"

मैंने कहा, "नहीं, मैं नई खरीद लूंगा।"

तो दूसरा बोला, "अबे रख ले पांव जलेंगे।"

साथियों के अनुरोध पर मैंने चप्पल पहन ली। पर मैं बहुत घबराया हुआ था। मैंने आज तक ऐसा नहीं किया था।

अब दूल्हा-दुल्हन को मंदिर ले गए। हम भी वहां गए। जब मंदिर से उतरकर चबूतरे पर बैठे तो मैंने मंदिर के बाहर अपनी चप्पल देखी। मैंने जो चप्पल पहनी थी वह उतार दी और अपनी पहन ली।

इतने में ही किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। मैं डर गया। जब मैंने देखा तो वह मेरा दोस्त था।

उसने कहा, "यार मेरी चप्पल गुम हो गई थी, वह यहां मिली। और तेरी चप्पल के पास रखी थी।"

मैंने कहा, "तेरी चप्पल मैंने पहनी थी।"

हम दोनों को अपनी-अपनी चप्पल मिल गई।

□ कमलेश खैरिया, दसवीं, भोपाल

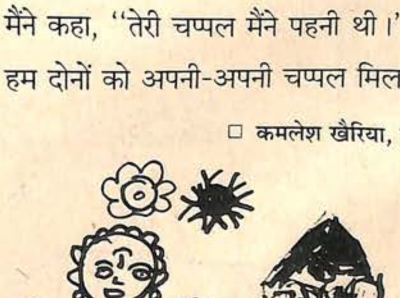

चित्र : मनस्विनी लता रवींद्र, चार वर्ष, बम्बई

मेरा पन्ना

ये चित्र उन नन्हे-मुन्नों ने बनाए हैं जिनके परिवार दिल्ली में हुए 1984 के दंगों में उजड़ गए थे। इनके साथ काम करने वालीं गोपा जोशी का कहना है, '1984 की भयानक तबाही को भुगतने के बाद किस प्रकार ये बच्चे फिर से नई ज़िंदगी की शुरूआत कर रहे हैं, ये चित्र इसका एक उदाहरण हैं।'

आशा कौर, दूसरी

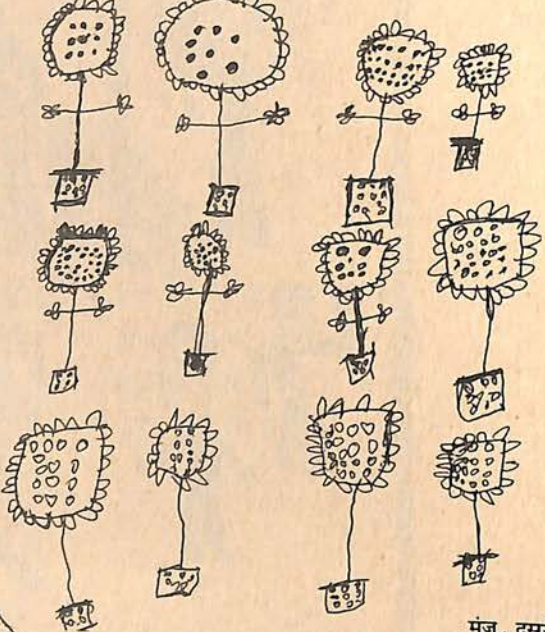

मंजू, दूसरी

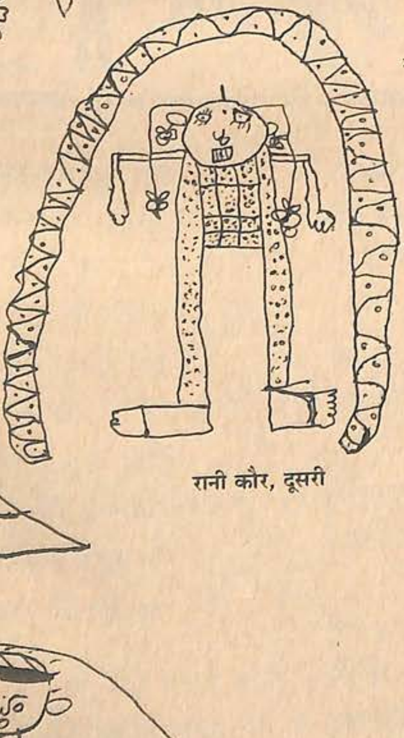

रानी कौर, दूसरी

रजनी, दूसरी

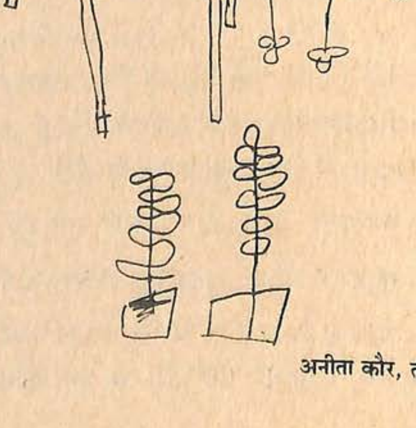

अनीता कौर, तीसरी

क्यों कांपती है धरती!

आर्मीनिया में आए हुए भूकम्प में एक स्कूल के गिरने से मरे हुए छात्रों का दर्दनाक दृष्य।

भूकम्प... भूकम्प... भूकम्प! यह शब्द पिछले कुछ दिनों से तुम लगातार सुन रहे होगे। 8 दिसंबर को ही रूस में जो जबरदस्त भूकम्प आया उसमें एक लाख से अधिक लोग मारे गए हैं। तीन नगर लगभग पूरी तरह खंडहर और मलबों में बदल गए हैं। पिछले साल ही नेपाल और हमारे देश में बिहार में आए भूकम्प ने व्यापक तबाही मचाई थी।

कहने को तो भूकम्प कुछ क्षणों के लिए आता है। पर अचानक बिना चेतावनी के आने के कारण कुछ ही क्षणों में वर्षों की मेहनत पर पानी फिर जाता है। अन्य कोई प्राकृतिक विपत्ति इतने कम समय में इतनी अधिक हानि नहीं पहुंचाती है।

वास्तव में रोज़ ही दुनिया के किसी न किसी हिस्से में ज़मीन अचानक झटकों के साथ हिलने-डुलने या थरथराने लगती है। ऐसा होने पर कभी-कभी उसमें दरारें पड़ जाती हैं। शहर के शहर खंडहर में बदल जाते हैं। धराशाही होते घरों में दबकर लोग मर जाते हैं। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच जाती है। कुछ क्षणों बाद सब कुछ फिर से स्थिर और शांत हो जाता है।

इसी को भूकम्प कहा जाता है। पर वास्तव में भूकम्प है क्या? आओ इसके जवाब की खोज में चलते हैं।

इतना तो तुम समझते हो ही कि भूकम्प का अर्थ है भू यानी पृथ्वी का कांपना। भूकम्प केवल पृथ्वी के ज़मीनी हिस्से पर ही नहीं आते, वरन् समुद्र के तल पर भी आते हैं। ऐसी स्थिति में समुद्र का पानी हिलता है और उसमें लंबी-लहरें पैदा होती हैं। कभी-कभी यह लहर इतना भयानक रूप ले लेती है कि समुद्र के किनारे बसे गांव के गांव उसमें बह जाते हैं। इन लहरों को **सुनामी** कहा जाता है। सुनामी एक जापानी शब्द है जिसका अर्थ है—बंदरगाह की लहर।

भूकम्प से हमारा परिचय बहुत पुराना है, क्योंकि पृथ्वी बनने के समय से ही भूकम्प आते रहे हैं। लोग इनसे भयभीत अवश्य रहे हैं, पर किसी को यह नहीं मालूम था कि भूकम्प आखिर क्यों आते हैं?

प्राचीनकाल से यह मान्यता रही है कि भूकम्प आने का कारण किसी देवता का रोष है। और जब देवता नाराज़ होता है तो पृथ्वी हिलने लगती है। एक मान्यता के अनुसार पृथ्वी शेषनाग के फन पर टिकी है। जब शेषनाग हिलते हैं तो भूकम्प आते हैं। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि कोई बहुत शक्तिशाली देवता या बड़ा जानवर पृथ्वी का भार अपने ऊपर उठाए हुए है। और जब यह देवता या जानवर हिलता-डुलता है या थककर अपने भार को एक कंधे से दूसरे पर रखता है तो पृथ्वी पर भूकम्प आता है। कुछ लोग थे जो भूकम्प के पीछे अग्नि देवता का हाथ बताते हैं। इसका कारण शायद यह है कि भूकम्प अक्सर ऐसी जगह पर आते हैं जहां ज्वालामुखी होते हैं। ज्वालामुखी में से धुंआ, आग और लावा निकलता रहता है। इससे लोगों को लगता था कि अग्निदेवता ही

भूकम्प करवा रहे हैं।

ग्रीक दार्शनिक अरस्तू ने भूकम्प का तार्किक कारण सोचने का प्रयास किया। उसने यह अनुमान लगाया कि पृथ्वी की सतह के नीचे हवा फंस जाती है और जब यह हवा बाहर निकलने की कोशिश करती है तो भूकम्प आते हैं। पर अरस्तू अपने इस अनुमान को प्रमाणित नहीं कर सका। फिर भी अरस्तू का यह मत सदियों तक प्रचलित रहा।

उधर लोग अनुमान लगाते रहे और इधर भूकम्प आते रहे। 24 जनवरी, 1556 को चीन के शनसी इलाके में आए भूकम्प से 8 लाख 30 हज़ार से अधिक लोग मारे गए। 30 दिसंबर 1703 में जापान में मरने वालों की संख्या 2 लाख से अधिक थी। और 11 अक्टूबर, 1737 में अपने ही देश में कलकत्ता में आए एक भूकम्प में 3 लाख से अधिक लोगों की जान गई। ऐसा ही विनाशकारी भूकम्प 1755 में पुर्तगाल में आया। इस भूकम्प का असर उत्तरी यूरोप से अफ्रीका तक पड़ा और उससे उत्पन्न सुनामी के कारण व्यापक विनाश हुआ। इस तबाही के बाद यूरोप के वैज्ञानिकों का ध्यान भूकम्प को समझने-जानने की ओर गया।

जॉन मिचेल नाम के एक वैज्ञानिक ने देखा कि ज़मीन के अंदर जो पत्थर हैं वे कई परतों में बिछे होते हैं। इन परतों को **स्ट्रेटा** कहा जाता है। कभी तो ये परतें समतल होती हैं पर कभी-कभी वे टेढ़ी या मुड़ी हुई होती हैं। इनको देखने पर लगता है जैसे किसी ने पृथ्वी के ढांचे को तोड़ा-मरोड़ा है। मिचेल का कहना था कि स्ट्रेटा के तोड़े-मरोड़े जाने से चट्टानों की परतें आपस में रगड़ खाती हैं। इससे शॉक तरंगें पैदा होती हैं। ये तरंगें रगड़ खाने वाले स्थान के चारों ओर फैलती हैं। और यही तरंगें भूकम्प हैं। यानी रगड़ इतनी शक्तिशाली होती है कि भूमि कांपने लगती है। मिचेल ने यह भी बताया कि

1964 में अलास्का (अमरीका) में **सुनामी** का एक चित्रकार द्वारा बनाया गया चित्र। 30 फुट से अधिक ऊंची लहरों ने रेलगाड़ियों को माचिस के डिब्बों की तरह पटक दिया।

भूकम्प समुद्र की सतह के नीचे भी आ सकते हैं और उनसे ही सुनामी लहरें बनती हैं। मिचेल का मत था कि 1755 में लिसबन में सुनामी लहरें समुद्र तट के भूकम्प से उत्पन्न हुई थीं।

चट्टानों की परत स्ट्रेटा

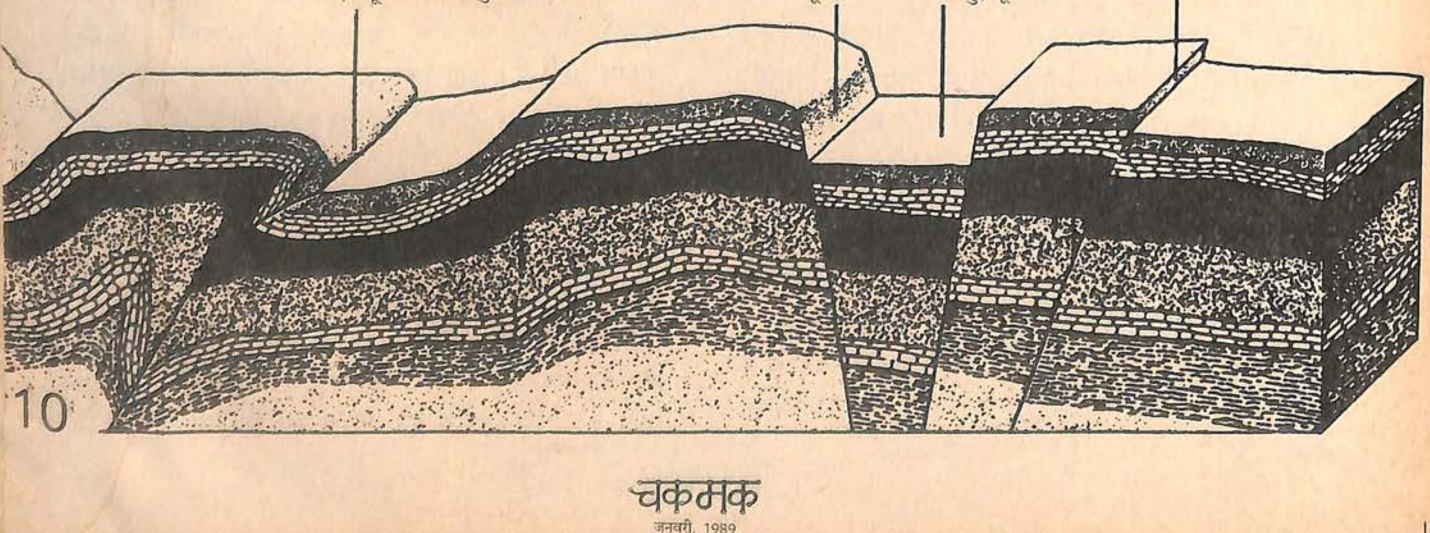

कैसी है अंदर से पृथ्वी

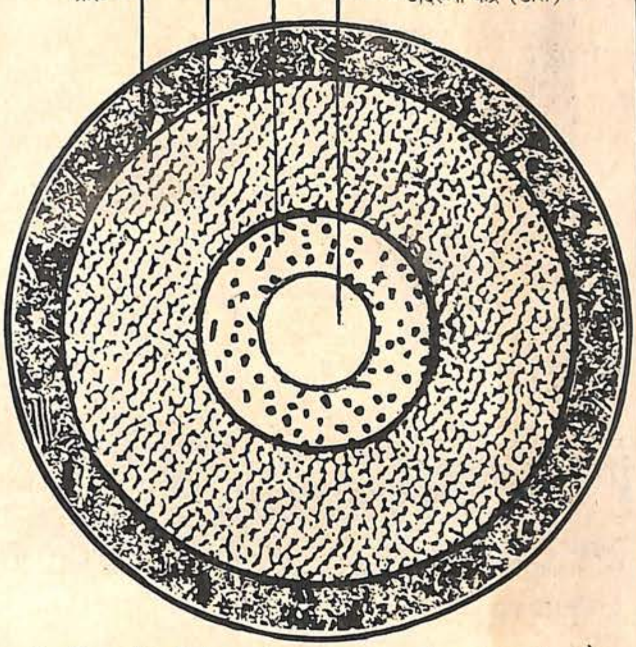

वैज्ञानिकों ने पाया कि भूकम्प पैदा करने वाली तरंगें कई प्रकार की होती हैं। कुछ तरंगें पृथ्वी की सतह पर चलती हैं और कुछ पृथ्वी के अंदर से होकर गुजरती हैं। पृथ्वी के अंदर से गुजरने वाली तरंगों के आधार पर वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की भीतरी संरचना का पता लगाया।

युगोस्लाविया के एक वैज्ञानिक आंद्रीजा मोहोरोबिसी ने 1909 में देखा कि ये तरंगें तुलनात्मक रूप से धीमी चलती हैं। परंतु जैसे-जैसे वे गहराई में पहुंचती हैं, उनकी गति बढ़ती जाती है! इससे उसने निष्कर्ष निकाला कि तरंगों की गति इसलिए बढ़ती है क्योंकि गहराई में जाने पर पत्थर चट्टानों का घनत्व अधिक होता है और तरंगें घने माध्यम में अधिक तेजी से प्रसारित होती हैं। परंतु उसने यह भी देखा कि एक विशेष गहराई पर पहुंचने के बाद तरंगों की गति अचानक एकदम बढ़ जाती है। यह गहराई सतह से 6 से 35 किलोमीटर नीचे तक होती है। यानी इस गहराई के बाद पृथ्वी की संरचना अचानक बदलती है और तरंगें एक ही किस्म के बहुत ठोस और अखंड पत्थर में से गुजरती हैं।

कुछ साल बाद, 1913 में, एक अमेरिकी वैज्ञानिक, बीनो गुटनबर्ग ने इन्हीं तरंगों की मदद से 2900 किलोमीटर की गहराई पर इससे भी अधिक घना, तरल माध्यम पाया।

इन सब अवलोकनों से वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला कि पृथ्वी का गोला तीन भागों में विभाजित है। गोले का केंद्र तरल लोहे का बना है जो लगभग 3600 कि.मी. मोटा है (इस भाग का केंद्र ठोस है) —चित्र देखो। इसके ऊपर का भाग ठोस पत्थर का बना है जो लगभग 2900 कि.मी. मोटा है। यह भाग मैंटल कहलाता है। और सबसे ऊपरी भाग ज़मीन और समुद्र—जो 10 से 65 कि.मी. मोटा है, उसे, क्रस्ट या कवच कहते हैं।

मिचेल ने बतलाया कि अगर भिन्न-भिन्न स्थानों पर भूकम्प आने का समय नोट किया जाए तो शॉक तरंगों की गति का अंदाज़ लगाया जा सकता है। इस जानकारी के विश्लेषण से यह पता किया जा सकता है कि तरंगें किस स्थान से शुरू हुई हैं। ऐसे स्थान को, जहां चट्टानों के आपस में रगड़ने से शॉक तरंगें शुरू होती हैं, **भूकम्प केंद्र (एपीसेंटर)** कहते हैं।

पर अभी भी भूकम्प में बहुत से रहस्य छिपे थे जिनके बारे में जानना वैज्ञानिकों के लिए एक समस्या बना रहा। सबसे महत्वपूर्ण बात थी कि भूकम्प की तरंगों के बारे में शोध कैसे हो? जाहिर है जहां भूकम्प आते रहते हों, वहां रहना तो खतरे से खाली नहीं था। अगर वैज्ञानिक भी वहां रहते तो शायद ज़िंदा नहीं बच पाते। हां, एपीसेंटर से निकलने वाली शॉक तरंगें दूर जाने पर काफ़ी कमजोर हो जाती हैं। एपीसेंटर से 25-30 किलोमीटर दूर बैठकर भूकम्प के अवलोकन आराम से लिए जा सकते थे। वास्तव में सारे भूकम्प इतने खतरनाक नहीं होते हैं। कई तो केवल खिड़कियों को खड़खड़ाते हैं और बरतन गिराते हैं। और अधिकतर भूकम्प तो इतने कमज़ोर होते हैं कि हमें उनके आने का पता भी नहीं चलता।

वैज्ञानिकों के लिए यह भी एक महत्वपूर्ण पहेली थी कि कमज़ोर से कमज़ोर भूकम्प को कैसे पहचाना जाए। या कहीं बहुत दूर आए शक्तिशाली भूकम्प की तरंगों का अवलोकन कैसे किया जाए। ये तरंगें हमारे पास आते-आते बहुत कमज़ोर हो जाती हैं। बहुत दिनों तक ऐसा कोई यंत्र या आला नहीं था जिसकी मदद से यह संभव हो पाता।

सन् 1855 में इटली के एक वैज्ञानिक लुईगी पालमिएरी ने भूकम्प को पहचानने वाला पहला यंत्र ईजाद किया। पर यह यंत्र बहुत संवेदनशील था। हल्की से हल्की धमक भी वह दर्ज करता। यहां तक कि सड़क पर चलती घोड़ा गाड़ी की धमक भी इस यंत्र में दर्ज हो जाती।

समय बीतता रहा और भूकम्प आते रहे। 1880 में जॉन मिल्न नामक एक अंग्रेज वैज्ञानिक ने भूकम्प पहचानने का एक अन्य यत्र बनाया। जॉन मिल्न उन दिनों जापान में भूविज्ञान के अध्यापक थे। जापान में भूकम्प बहुत अधिक संख्या में आते हैं। इससे मिल्न को भूकम्पों का करीब से अवलोकन करने का मौका मिला। और इसी दौरान इस यंत्र का आविष्कार हुआ। इस यंत्र को **साइज़्मॉग्राफ** कहते हैं,

कैसे नापते हैं भूकम्प!

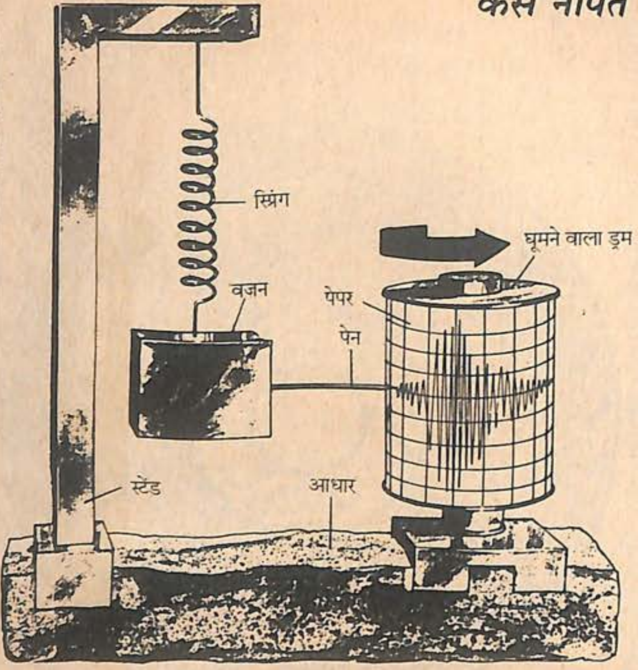

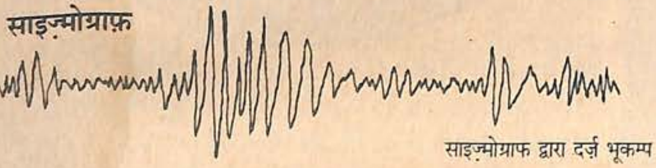

साइज़्मोग्राफ द्वारा दर्ज़ भूकम्प

भूकम्प को दर्ज़ करने के लिए वैज्ञानिक साइज़्मोग्राफ का उपयोग करते हैं।

साइज़्मोग्राफ किस प्रकार काम करता है—आओ देखते हैं।

जैसा कि तुम चित्र में देख रहे हो साइज़्मोग्राफ कंक्रीट से बने आधार पर स्थित है। यह आधार सतही मिट्टी के नीचे ठोस पत्थर पर जमा रहता है। मज़बूत स्टेंड से एक वजन स्प्रिंग पर लटका हुआ है। वजन के सिरे पर एक पेन लगा है जो एक घूमने वाले ड्रम को छू रहा है। ड्रम पर पेपर लिपटा होता है।

जब भूकम्प आता है तो स्प्रिंग के कारण वजन तो स्थिर रहता है, एक ही जगह पर। परंतु ड्रम ऊपर-नीचे होता है। ड्रम के ऊपर-नीचे होने से पेन ड्रम पर लिपटे कागज़ पर रेखा खींचता है। भूकम्प जितना शक्तिशाली होगा लाइनें भी उतनी ही ऊपर नीचे होंगी।

1935 में एक अमरीकी वैज्ञानिक चार्ल्स फ्रांसिस रिख्तर ने भूकम्प की शक्ति नापने का पैमाना बनाया। यह पैमाना 9 भागों में बंटा है। इन भागों को क्रमशः 1 से 9 तक नंबर दिए गए हैं। इस पैमाने को रिख्तर पैमाना कहा जाता है।

इस पैमाने पर एक नंबर बताने वाला भूकम्प इतना हल्का होगा कि हम उसे पहचान भी नहीं पाएंगे—उसे केवल साइज़्मोग्राफ द्वारा भांपा भर जा सकता है। दो नंबर का भूकम्प बिना साइज़्मोग्राफ के भी महसूस किया जा सकता है। 6 नंबर के भूकम्प से दीवारों में दरारें पड़ जाती हैं और नौ नंबर का भूकम्प तबाही मच देता है। अभी तक कोई भी भूकम्प 9 नंबर का नहीं मापा गया है। 1906 में जिस भूकम्प ने अमरीका के शहर अलास्का को तबाह कर दिया था, वह रिख्तर पैमाने पर 8.25 मापा गया था। हाल ही में रूस में आए भूकम्प को पैमाने पर 8 मापा गया है। साल भर में एकाध भूकम्प ही 8 तक का आता है—अधिकतर कम शक्ति के आते हैं। यह ध्यान रहे कि रिख्तर पैमाने का हर नंबर पहले से 31 गुना अधिक शक्तिशाली भूकम्प को दर्शाता है।

वैसे केवल रिख्तर पैमाने से भूकम्प के खतरे का सही-सही अंदाज़ नहीं लगाया जा सकता। क्योंकि कभी-कभी भूकम्प भयानक होता है, पर ऐसी जगह आता है जहां या तो कोई बस्ती ही नहीं है या फिर है तो ऐसी कि जिसमें घर और अन्य इमारतें मज़बूत बनी हुई हैं।

जिसका ग्रीक भाषा में अर्थ है—भूकम्प लेखन। साइज़्मॉग्राफ के बारे में बॉक्स देखो! साइज़्मॉग्राफ के आविष्कार से भूकम्प की तरंगों का अध्ययन करना आसान हो गया। इन तरंगों के अध्ययन से पृथ्वी की संरचना के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिली (देखो बाक्स—कैसी है अंदर से पृथ्वी!)। बाद में इस जानकारी से भूकम्प को समझने में भी मदद मिली।

धीरे-धीरे समय के साथ लोगों की यह धारणा भी बन गई कि भूकम्प उन जगहों पर ज़्यादा आते हैं जहां पृथ्वी के नीचे की चट्टानों में खूब लंबी दरारें हैं। इन दरारों को **भूमिदोष** (**भ्रंशः**) कहते हैं।

दुनिया का एक बहुत मशहूर भूमिदोष है—सैन एन्ड्रिआस भूमिदोष। यह पश्चिमी कैलीफोर्निया में स्थित है। 1906 में सैन एन्ड्रिआस के किनारे आए भूकम्प में सैन फ्रांसिस्को नगर नष्ट हो गया था।

सैन एन्ड्रिआस भूमिदोष

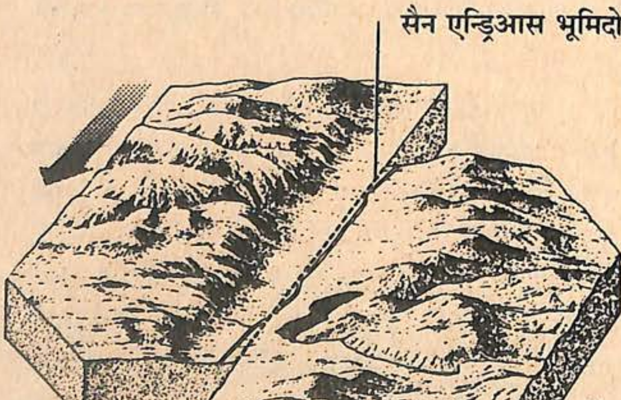

यह भी देखा गया कि भूकम्प के बाद ऐसी दरार के एक तरफ की चट्टान दूसरी ओर की चट्टान की तुलना में आगे

वेगनर की महाद्वीप संबंधी परिकल्पना

22.5 करोड़ वर्ष पहले

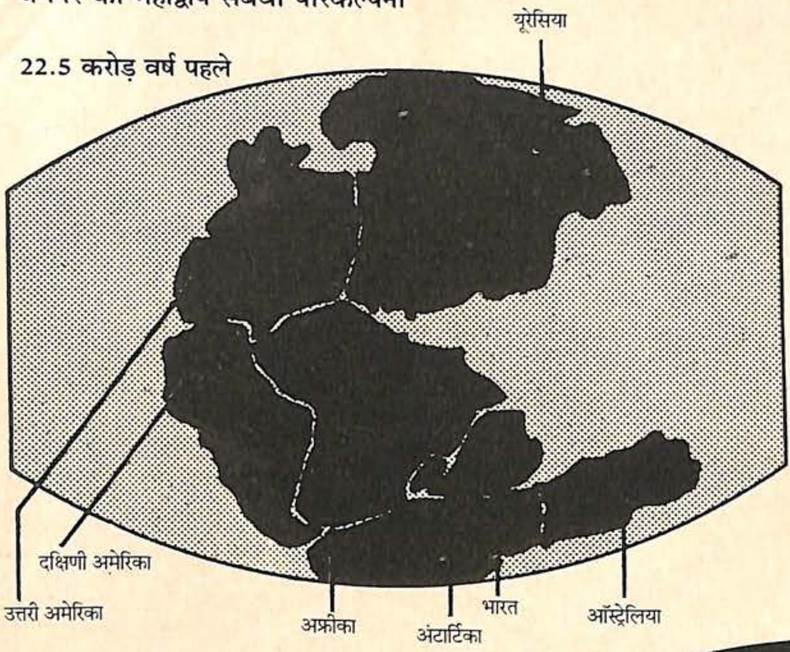

और आज

या पीछे हट जाती है। यह हटाव तीन से लेकर छह मीटर तक हो सकता है। या कभी-कभी दोनों में से कोई भी चट्टान ऊपर की ओर उठ जाती है या नीचे की ओर धंस जाती है। कभी-कभी दोनों ही प्रक्रियाएं हो सकती हैं।

अब भी सवाल यह था कि ऐसा क्यों होता है। क्यों दरार के दोनों ओर की भूमि आगे-पीछे खिसक जाती है या ऊपर नीचे उठ जाती है?

इस सवाल के जवाब के रूप में कई परिकल्पनाएं सामने आईं। पर वास्तव में इसका उत्तर उभरा एक जर्मन वैज्ञानिक एल्फ्रेड लोथर वेगनर द्वारा 1912 में किए गए अवलोकनों से।

अगर हम दुनिया के भौगोलिक नक्शे को ध्यान से देखें तो पाएंगे कि दक्षिणी अमरीका का पूर्वी तट, अफ्रीका के पश्चिमी तट के आकार से मेल खाता है। ऐसा लगता है कि अगर इन दोनों को मिलाकर एक साथ रखा जाए तो दोनों एक-दूसरे में फिट हो जाएंगे। कहीं ऐसा तो नहीं है कि दक्षिणी अमरीका और पश्चिमी अफ्रीका बहुत पहले एक ही जगह रहे हों। और फिर किसी कारण से दो टुकड़ों में बंटकर सरकते हुए एक-दूसरे से दूर पहुंच गए हों।

वेगनर ने संभावना जताई कि हो सकता है लाखों साल पहले सभी महाद्वीप आपस में जुड़े रहे हों। उसने ऐसी जुड़ी हुई पृथ्वी को नाम दिया **'पैनगेया'**। जिसका ग्रीक भाषा में अर्थ है—समूची पृथ्वी। वेगनर ने अनुमान लगाया कि यही 'पेनगैया' कभी कई टुकड़ों में बंट गया। और ये टुकड़े जिन्हें आज हम महाद्वीप कहते हैं, खिसकते हुए एक दूसरे से दूर चले गए (देखो चित्र)। वेगनर की बात वास्तव में सही

मुख्य टेक्टॉनिक प्लेट

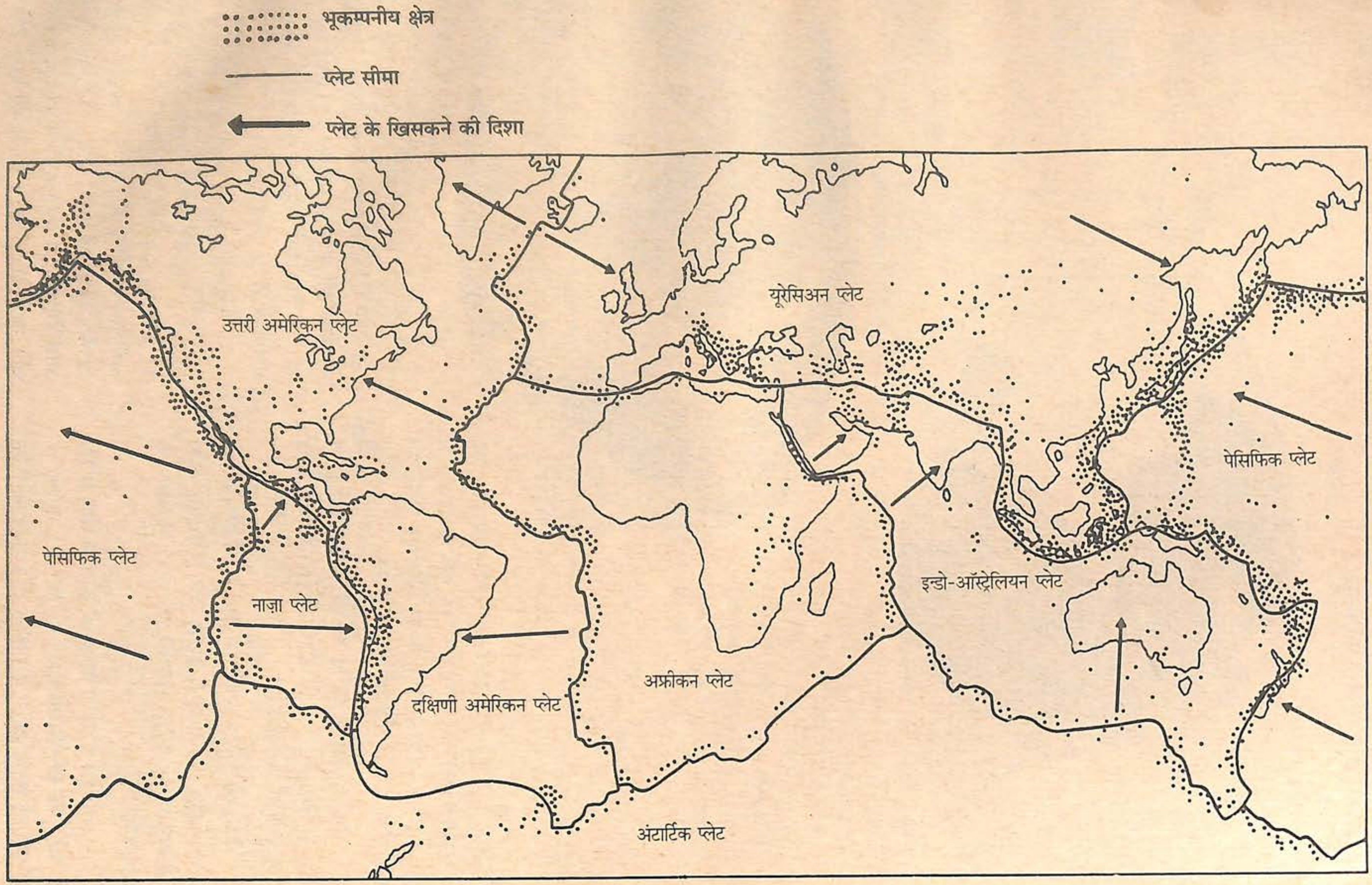

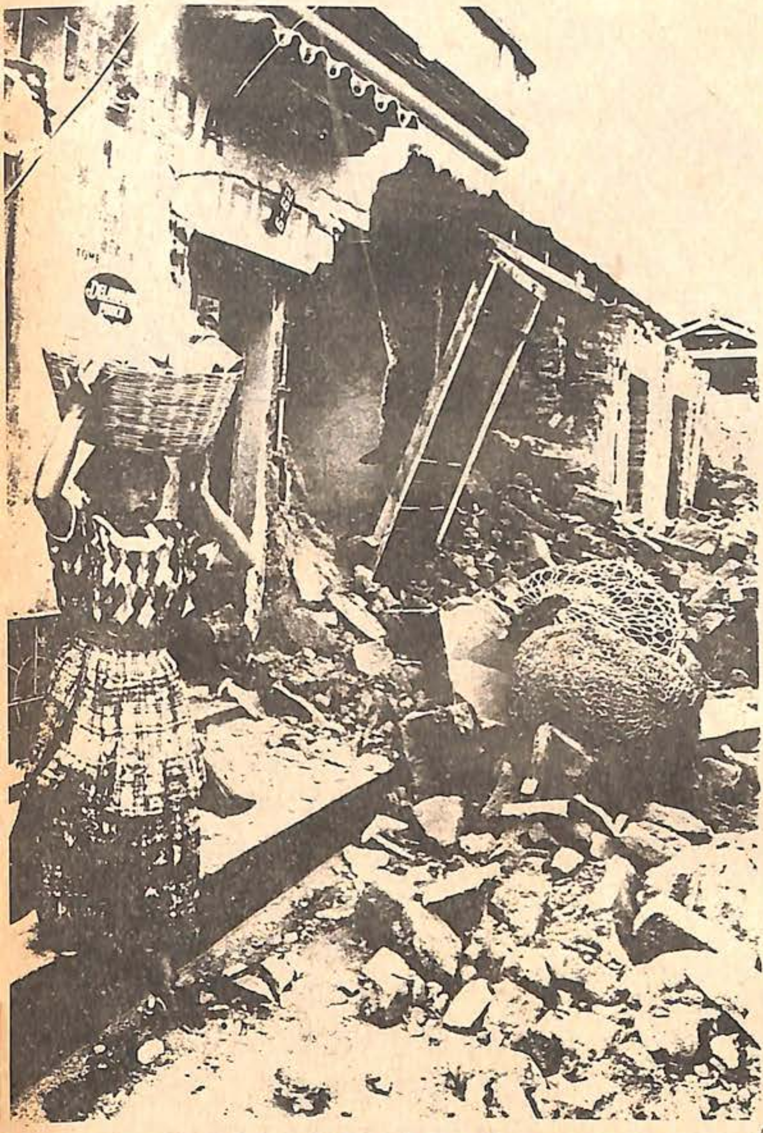

सकता था कि वह ठोस वस्तु ध्वनि के स्रोत से कितनी दूर है। इन ध्वनि तरंगों को **सोनार** कहा गया। 1925 में सोनार की मदद से समुद्र तल की जांच करने वाले एक दल ने पाया कि अटलांटिक महासागर का तल समतल नहीं है। बल्कि उसके बीचों-बीच पहाड़ों की एक श्रृंखला है। यह श्रृंखला केवल अटलांटिक ही नहीं बल्कि प्रशांत आर्कटिक व अंटार्कटिक में भी फैली हुई है। इसी क्रम में 1953 में एक अमेरीकी वैज्ञानिक विलियम मोरिस इविंग ने पता लगाया कि इस श्रृंखला के मध्य में एक विशाल दरार है। और यह दरार पृथ्वी के क्रस्ट को टुकड़ों में बांटती है। यानी मेंटल के ऊपर का क्रस्ट बड़े-बड़े टुकड़ों के रूप में है। इन्हीं टुकड़ों पर महाद्वीप स्थित हैं। इन टुकड़ों को **टेक्टॉनिक** प्लेट नाम दिया गया। ऐसी 8 मुख्य प्लेट पहचानी गईं। इनके अतिरिक्त 15-16 अन्य छोटी प्लेटों के बारे में भी पता चला।

1962 में एक अन्य अमेरीकी वैज्ञानिक हेरी हेमंड हेस ने टेक्टॉनिक प्लेट के आधार पर बताया कि महाद्वीप क्यों सरकते हैं? उसका कहना था कि क्रस्ट के बीच की दरारों में से मेंटल की सामग्री निकलकर क्रस्ट में मिल जाती है। सामग्री निकलने पर टेक्टॉनिक प्लेट खिसकती हैं जिससे वे एक दूसरे से टकराती हैं, रगड़ खाती हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। इन प्लेटों की गतिशीलता से ही भूकम्प उत्पन्न होते हैं। भूकम्पनीय क्षेत्र भी लगभग इन्हीं प्लेटों के बीच की दरारों के पास पाए गए हैं।

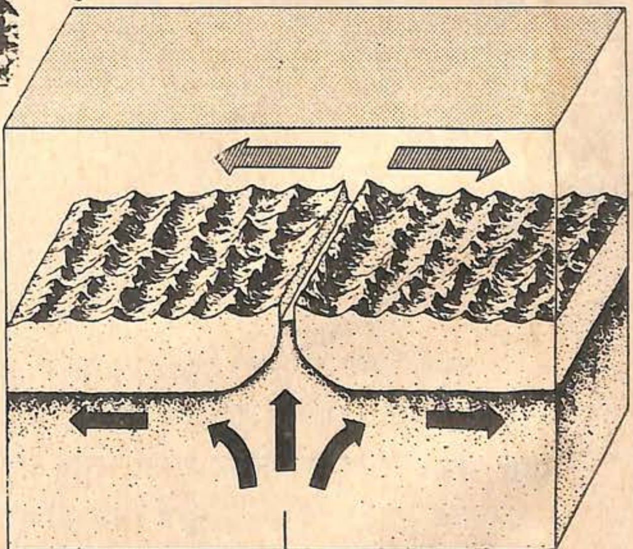

निकली। इस परिकल्पना की अब कई स्रोतों से पुष्टि हुई है।

वेगनर ने एक और बात कही कि महाद्वीप जिन पत्थरों से बने हैं, वे एक अन्य ठोस और अधिक घने पत्थर की परत पर स्थित हैं। और महाद्वीप इसी पत्थर पर सरकते रहते हैं। महाद्वीपों के सरकने-खिसकने से ही भूकम्प आते हैं। परंतु यह परिकल्पना लोगों के गले नहीं उतरी। क्योंकि पत्थर पर पत्थर सरकने की संभावना कम है।

पर यह महसूस किया गया कि वेगनर की बात में कुछ तथ्य तो है। महाद्वीप सरकते या खिसकते अवश्य हैं, पर क्यों? इस क्यों का पता चला, पर एक लंबी कहानी के बाद।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक पाल लेंगेविन ने कुछ ऐसी ध्वनि तरंगें पैदा कीं, जो पानी में प्रसारित होकर किसी ठोस चीज़ से टकराने पर वापस स्रोत तक पहुंचती थीं। इस प्रतिध्वनि के आधार पर यह बताया जा

रूस के आर्मीया गणराज्य में जो भूकम्प आया, उसका कारण उन प्लेटों का आपस में टकराना बताया गया है जिन पर अरब देश और इरान स्थित हैं।

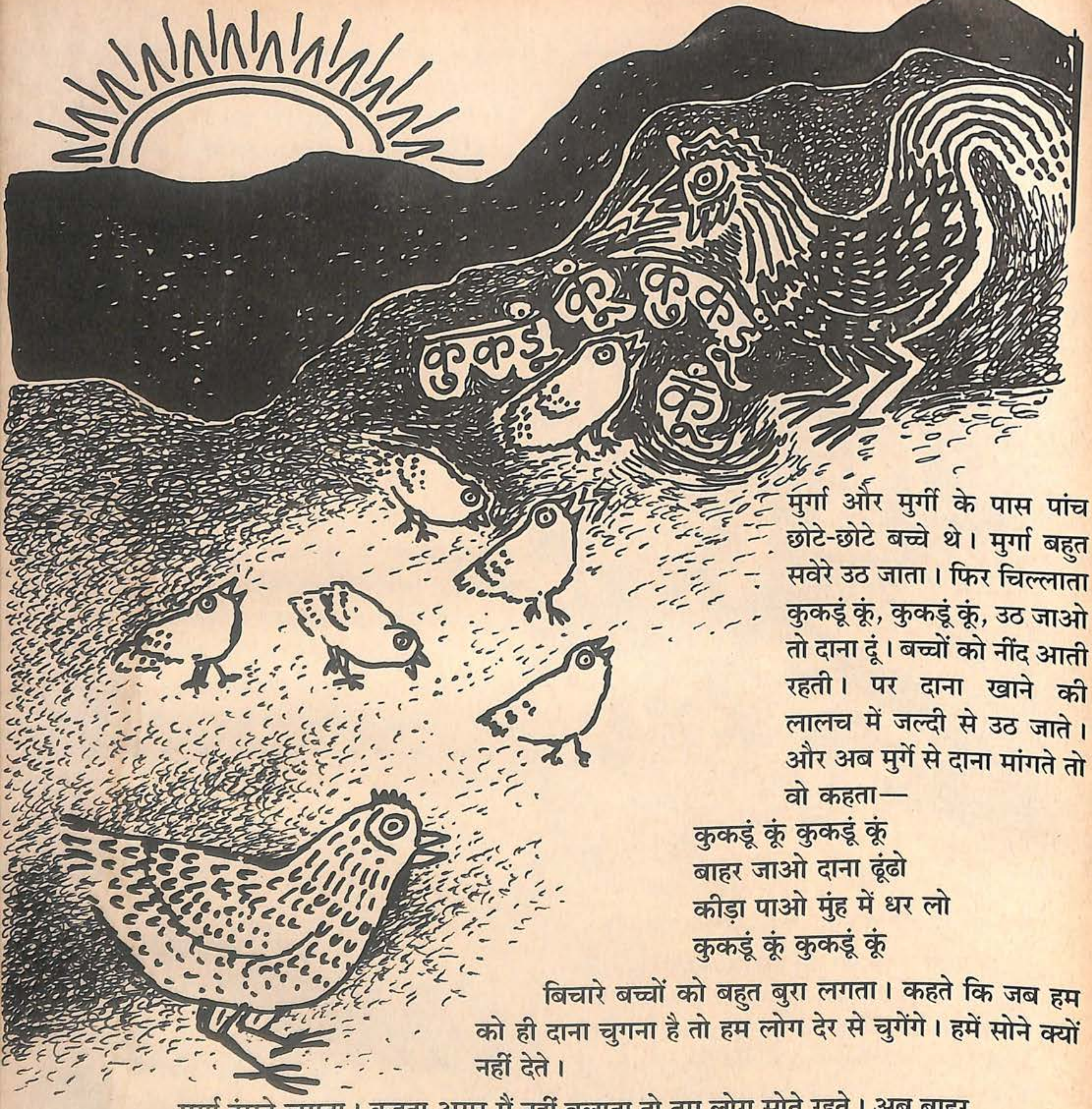

मुर्गा और मुर्गी के पास पांच छोटे-छोटे बच्चे थे। मुर्गा बहुत सवेरे उठ जाता। फिर चिल्लाता कुकड़ूं कूं, कुकड़ूं कूं, उठ जाओ तो दाना दूं। बच्चों को नींद आती रहती। पर दाना खाने की लालच में जल्दी से उठ जाते। और अब मुर्गे से दाना मांगते तो वो कहता—

कुकड़ूं कूं कुकड़ूं कूं
बाहर जाओ दाना ढूंढो
कीड़ा पाओ मुंह में धर लो
कुकड़ूं कूं कुकड़ूं कूं

बिचारे बच्चों को बहुत बुरा लगता। कहते कि जब हम को ही दाना चुगना है तो हम लोग देर से चुगेंगे। हमें सोने क्यों नहीं देते।

मुर्गा हंसने लगता। कहता अगर मैं नहीं बुलाता तो तुम लोग सोते रहते। अब बाहर चल कर देखो। सवेरे-सवेरे तुम्हें कितनी सारी चीज़ें खाने के लिए मिलेंगी। और मुर्गा और मुर्गी अपने बच्चों को लेकर बाहर घूमने लगते।

मुर्गा खुश होकर गाने लगता—
कुकड़ूं कूं कुकड़ूं कूं
बच्चे लेकर बाहर निकलूं
दाना खाऊं कीड़ा पकड़ूं
कुकड़ूं कूं कुकड़ूं कूं

चित्र : कैरन □ सुधा चौहान

मकड़ा और मक्खी

इक दिन किसी मक्खी से यह कहने लगा मकड़ा
इस राह से होता है गुज़र रोज़ तुम्हारा
लेकिन मेरी कुटिया की न जागी कभी किस्मत
भूले से कभी तुम ने यहां पांव न रखा

गैरों से न मिलिये तो कोई बात नहीं है
अपनों से मगर चाहिये यूं खिंच के न रहना
आओ जो मेरे घर में तो इज़्ज़त है यह मेरी
वह सामने सीढ़ी है जो मंज़ूर हो आना

मक्खी ने सुनी बात जो मकड़े की तो बोली
हज़रत! किसी नादान को दीजिए यह धोखा,
इस जाल में मक्खी कभी आने की नहीं है
जो आप की सीढ़ी पे चढ़ा फिर नहीं उतरा

मकड़े ने कहा वाह फरेबी मुझे समझे
तुम सा कोई नादान ज़माने में न होगा
मंज़ूर तुम्हारी मुझे खातिर भी वगरना
कुछ फायदा अपना तो मेरा इस में नहीं था

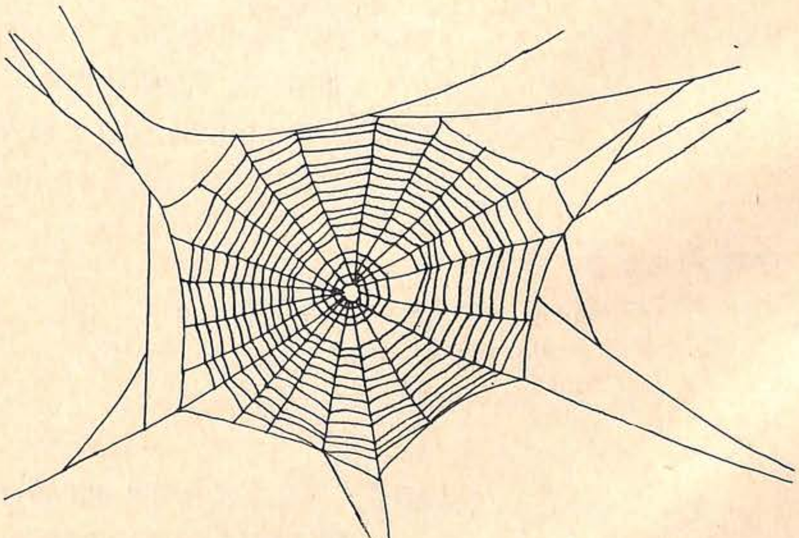

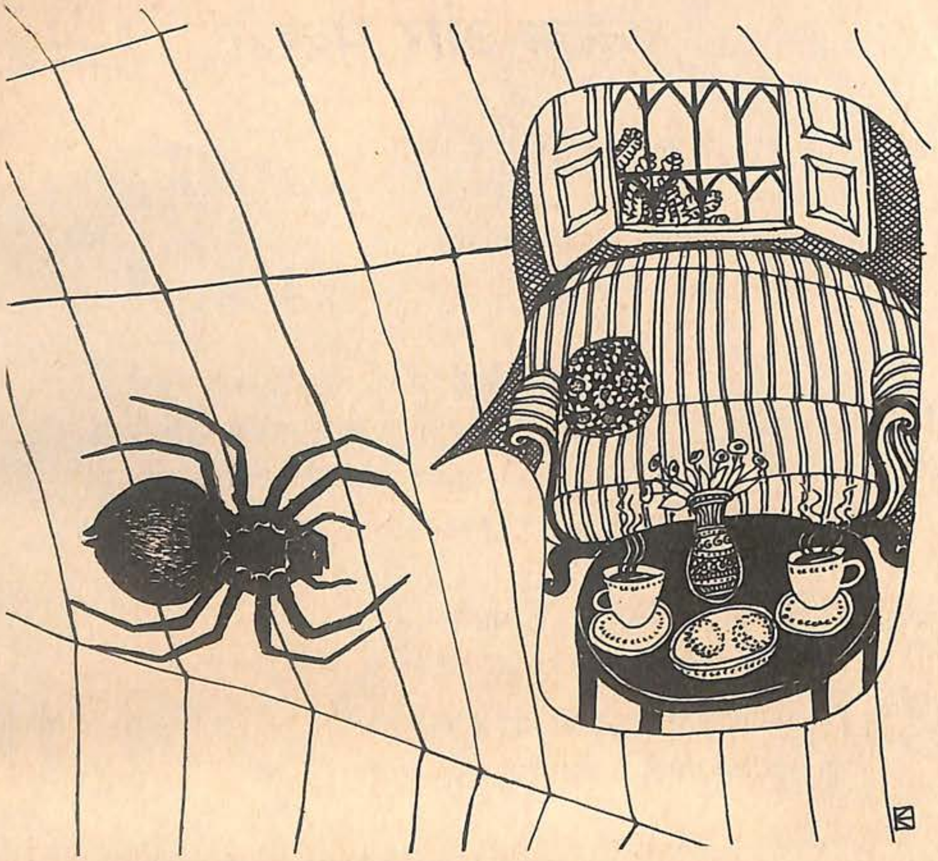

उड़ती हुई आई हो खुदा जाने कहां से
ठैरो जो मेरे घर में तो है इस में बुरा क्या?
इस घर में कई तुम को दिखाने की हैं चीज़ें
बाहर से नज़र आती है छोटी सी यह कुटिया

लटके हुए दरवाज़ों पे बारीक हैं परदे
दीवारों को आइनों से है मैं ने सजाया
मेहमानों के आराम को हाज़िर हैं बिछौने
हर शख्स को सामान यह मयस्सर नहीं होता

मक्खी ने कहा खैर यह सब ठीक है लेकिन
मैं आप के घर आऊं यह उम्मीद न रखना
इन नर्म बिछौनों से खुदा मुझ को बचाये
सो जाये कोई उन पे तो फिर उठ नहीं सकता

मकड़े ने कहा दिल में सुनी बात जो उसकी
फांसूं उसे किस तरह यह कमबख्त है दाना
सौ काम खुशामद से निकलते हैं जहां में
देखो जिसे दुनिया में खुशामद का है बन्दा

यह सोच के मक्खी से कहा उसने बड़ी बी!
अल्लाह ने बख्शा है बड़ा आप को रुतबा!
होती है उसे आप की सूरत से मुहब्बत
हो जिस ने कभी एक नज़र आप को देखा

आंखें हैं कि हीरे की चमकती हुई कनियां
सर आप का अल्लाह ने कलग़ी से सजाया
यह हुस्न यह पोशाक यह खूबी यह सफाई
फिर इस पे कयामत है यह उड़ते हुए गाना

मक्खी ने सुनी जब यह खुशामद तो पसीजी
बोली कि नहीं आप से मुझको कोई खटका
इंकार की आदत को समझती हूं बुरा मैं
सच यह है कि दिल तोड़ना अच्छा नहीं होता,

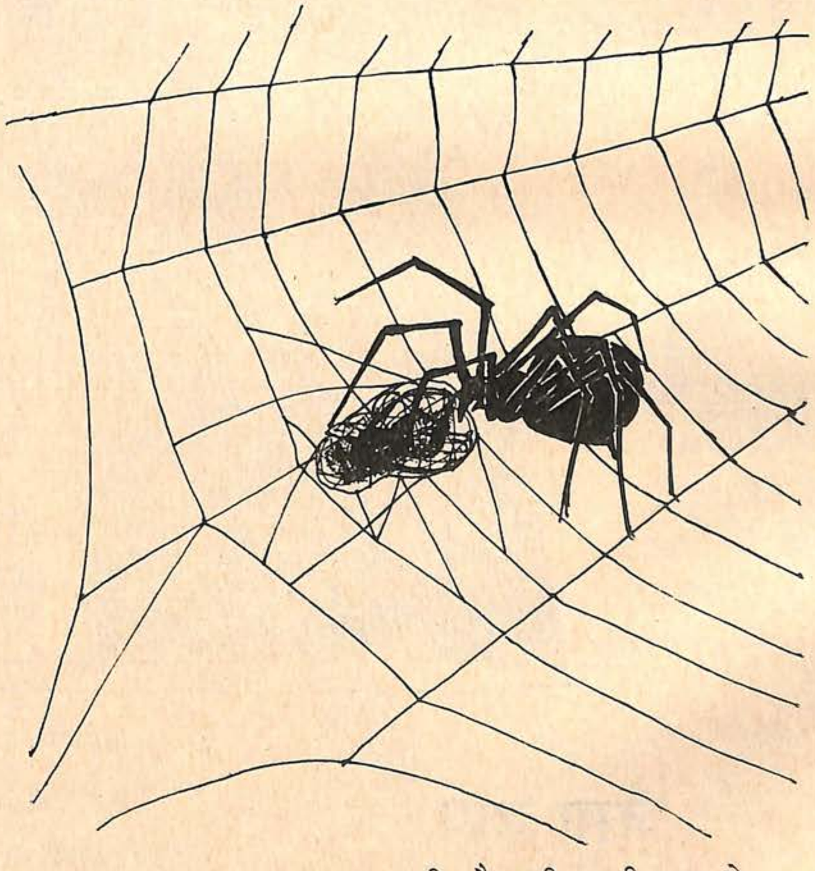

यह बात कही और उड़ी अपनी जगह से
पास आई तो मकड़े ने उछल कर उसे पकड़ा
भूखा था कई रोज़ से, अब हाथ जो आई
आराम से घर बैठ के मक्खी को उड़ाया।

□ इकबाल

सभी चित्र : कैरन

भाग-पांच

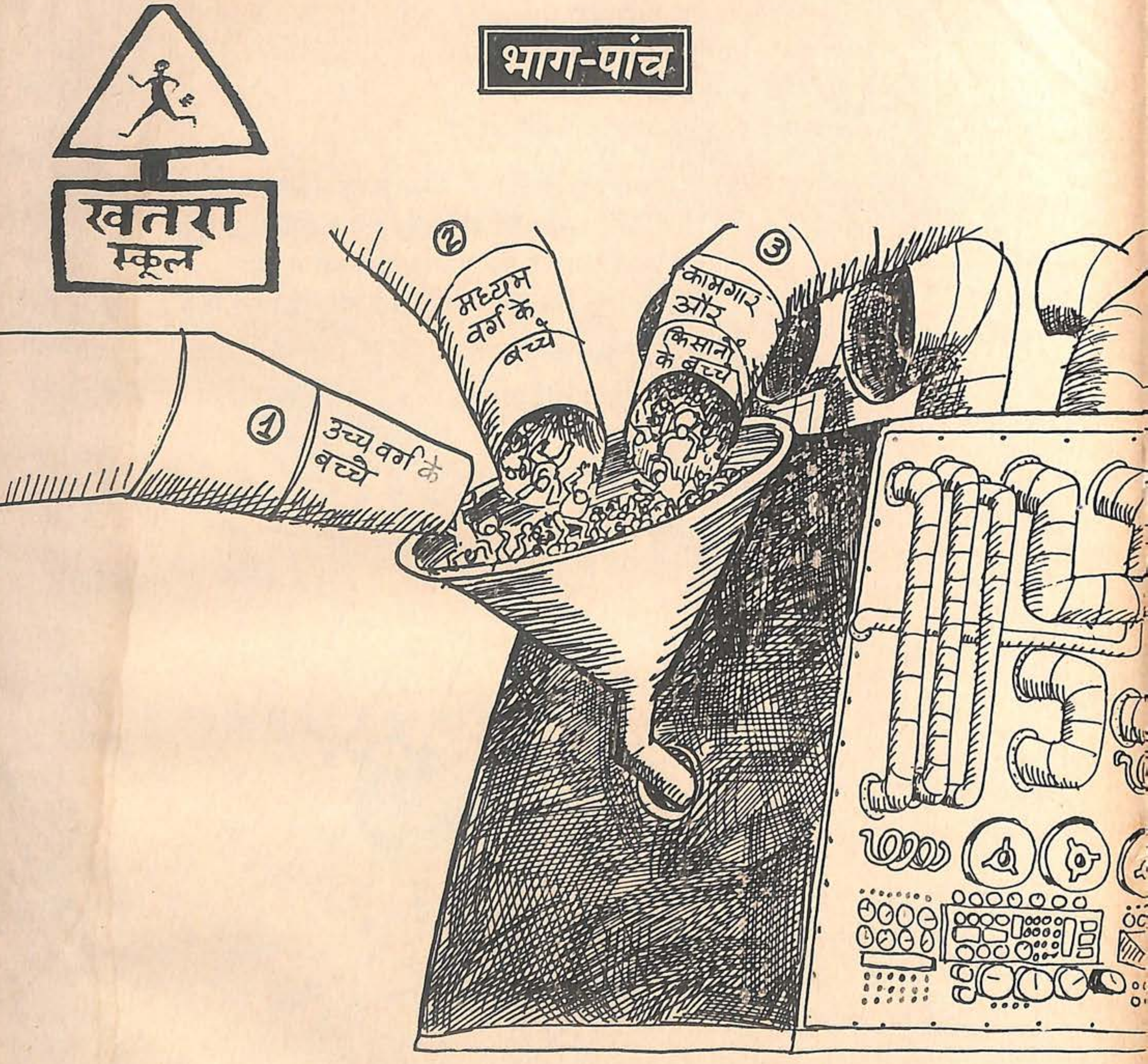

जैसा बाप वैसा बेटा

आमतौर पर बच्चे उसी वर्ग के व्यवसाय
यह बात खासतौर पर समाज के सबसे उ
उच्चवर्ग के लगभग 42% बच्चे अपने पित
हैं।

सीढ़ी के दूसरे छोर पर 64% मज़दूरों के ब
का सवाल है, इस वर्ग के 39% बच्चे तो
में काम पा जाते हैं।

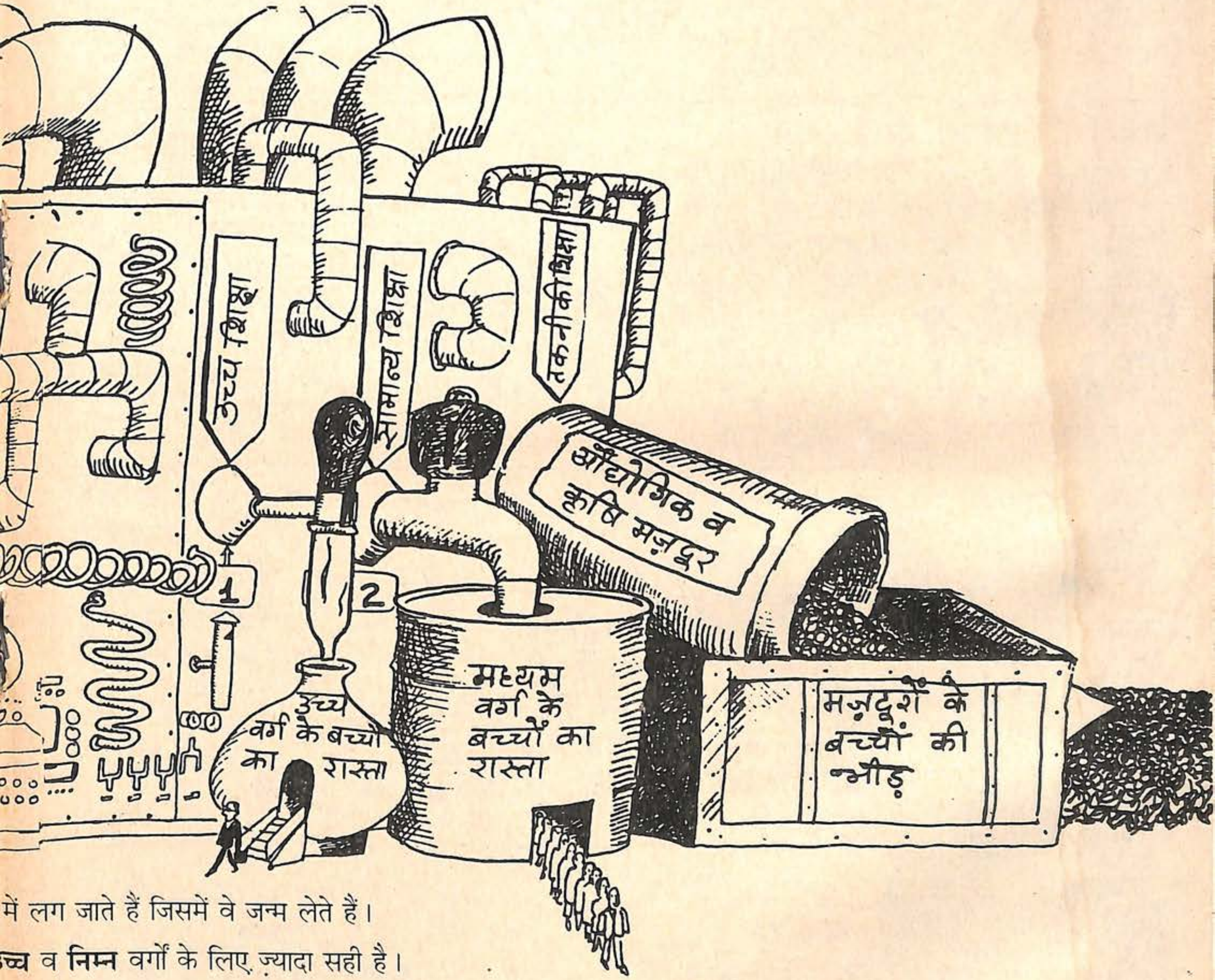

में लग जाते हैं जिसमें वे जन्म लेते हैं।
च्च व **निम्न** वर्गों के लिए ज़्यादा सही है।
ा की तरह ही व्यवसाय या कहीं अफसरी करते

च्चे मज़दूरी ही करते हैं। और जहां तक किसानों
किसानी ही करते हैं और 35% बच्चे कारखानों

आमतौर पर स्कूल का कैरियर ही व्यवसाय भी तय कर देता है!
तो क्या?
इस तरह समाज में आपकी स्थिति स्कूल के परिणाम से ही तय हो जाती है!
इससे अधिक प्रजातांत्रिक और क्या हो सकता है!
नहीं भई, इसका साफ-साफ मतलब यह है कि स्कूल चली आ रही स्थिति को बनाए रखता है!
तुमने खुद ही देखा, मज़दूरों के बच्चे मज़दूर ही बनते हैं!
अधिकतर.... और उच्च वर्ग के बच्चे प्रथम श्रेणियों की नौकरियों में ही जाते हैं.... यह तो सामान्य बात है!
'सामान्य है' से तुम्हारा क्या मतलब?
प्यारे भाई, बच्चे या तो होनहार हैं या नहीं! उच्चवर्गों के बच्चे अपने माता-पिता की तरह मेधावी होते हैं.. इतनी सी तो बात है...!
और शायद तुम कहोगे कि मज़दूरों के बच्चे बुद्धू होते हैं!
हाँ.. इतना तो कह ही सकते हैं कि अपने पालकों की तरह, वे भी 'बुद्धिमान' नहीं होते....!
बुद्धि तो भई बराबर-बराबर बँटी रहती है नहीं! इसके लिए कोई कुछ नहीं कर सकता - न समाज और न स्कूल!
यह गलत है!

नाकामी के कारण कहीं और ढूंढने होंगे!
कहीं और? कहां?
9
---- स्कूली व्यवस्था के छुपे हुए चलन में!
छुपे हुए?' क्या मतलब है तुम्हारा!
10
एकाध शिक्षक की तमाम कोशिशों के बावजूद इस बात को समझना होगा कि स्कूल व्यवस्था में ऐसा क्या है कि कुछ बच्चे आगे बढ़ते हैं और अधिकांश पीछे रह जाते हैं...
11
शिक्षा की यह मशीनरी कुछ इस तरह बनी है कि सामान्यतया वह एक शिक्षक के बेटे को आगे बढ़ाएगी, लेकिन मज़दूर के बच्चे को रिजेक्ट करेगी!
इस बात को सिद्ध करना पड़ेगा!
12
ठीक है! तो हमें इस मशीन के हर पुरज़े की बारीकी से जांच करनी होगी!

कार्य-कुशल
एक अलग
बंद और सुरक्षित
संचालित
अरे भाई! यह मशीन तो ठीक-ठाक चलती दिखाई पड़ रही है! अच्छा होगा हम इसे हाथ न लगाएं, कहीं गड़बड़ न हो जाए!

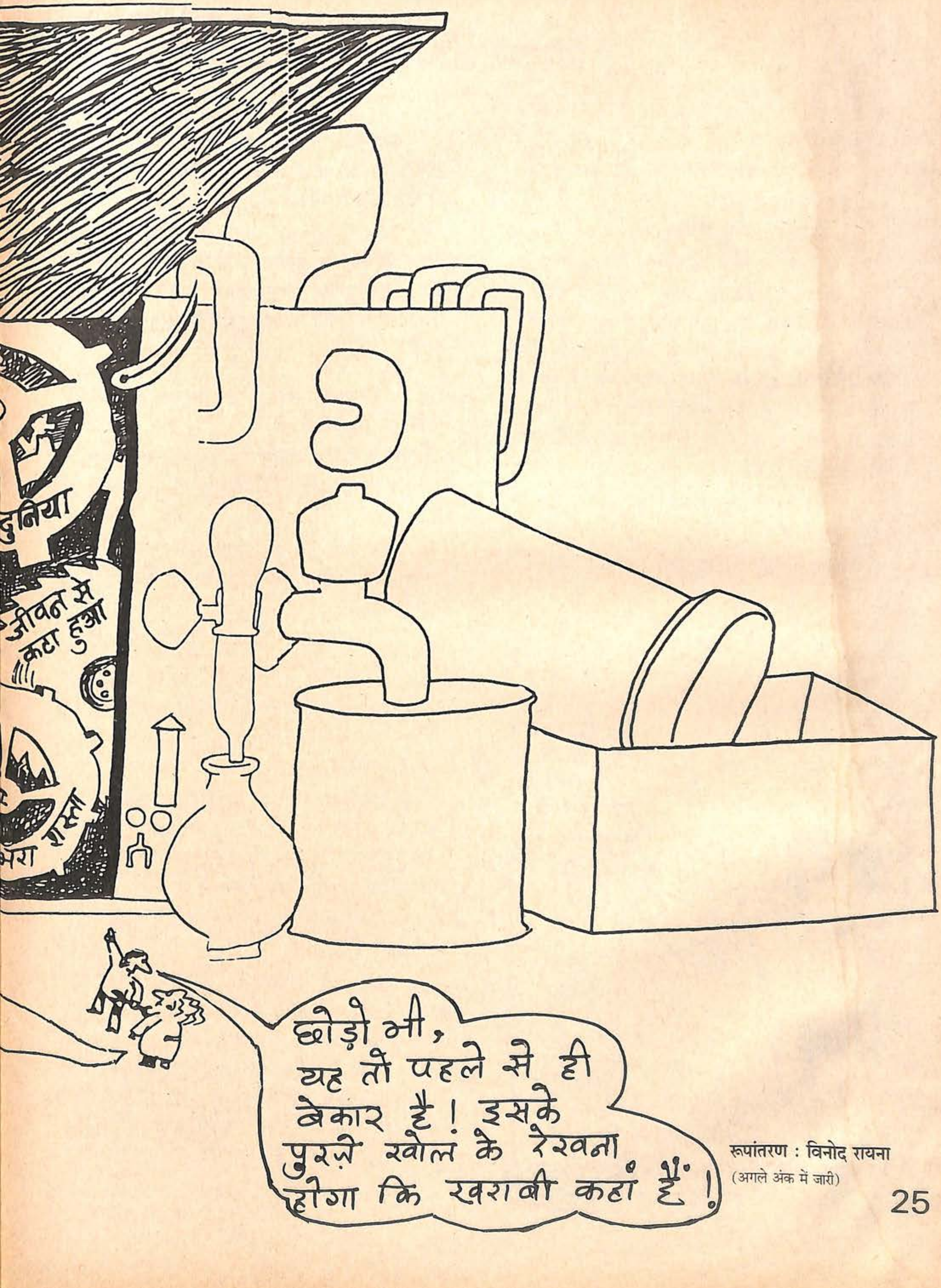

रूपांतरण : विनोद रायना

(अगले अंक में जारी)

एपदम ठीप है!

"कैसे हो गुरुदेव?"

सुबह-सुबह यंत्रमानव को गुड मार्निंग करने का रिवाज़ था, इसलिए टिंगू ने यूं पूछा।

"ठीप है।" रोबोट ने जवाब दिया।

टिंगू चमका, यह 'ठीप है' क्या है?

विदेश से आया था रोबोट, इस लिए शायद यह अंग्रेजी में बोलता होगा, यह सोचकर टिंगू 'ठीप है' के नज़दीक अंग्रेजी शब्द खोजने लगा। चीप है, सीप है, बीप है, डीप है, जीप है, कीप है, लीप है, पीप है, टीप है, वीप है... परंतु कोई अर्थ नहीं निकलता। यंत्रमानव से तो वह 'वेरी फाईन', 'वेरी गुड' जैसे उत्तर की आशा कर रहा था, उस के बदले यह 'ठीप है' शब्द सुनकर वह आश्चर्य में पड़ गया।

उसने यंत्रगुरु से दूसरा प्रश्न पूछा, "थोड़ा ठीप है या ज़्यादा ठीप है?"

तुरंत ही रोबोट ने उत्तर दिया, "एपदम ठीप है।"

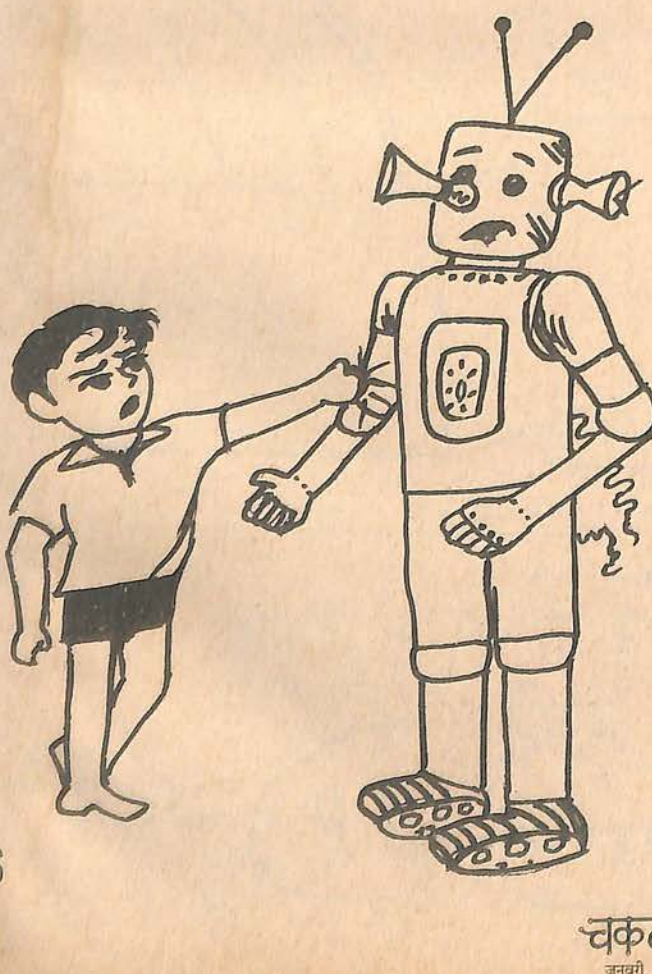

टिंगू फिर चमका। यह 'एपदम' क्या है? अभी तो 'ठीप है' का अर्थ नहीं मिल पाया था, तो यह एपदम, बीपदम, सी पदम कहां से टपका?

उसने गुस्से में एक मुक्का ठोक दिया गुरुदेव को। मोर्निंग ब्रेकफास्ट के तौर पर दी गई गुरुपूजा के साथ टिंगू ने पूछा, "गुरुब्रह्मा! यह 'एपदम' क्या है? और यह 'ठीप है' क्या बला है? हम तुम्हारा हाल पूछ रहे हैं और तुम पहेलियां बुझा रहे हो!"

यंत्रमानव ने उत्तर दिया, "यह तेरी पसौटी है, मेरी परामत है, मुंह पड़वा मत पर...!"

अब तो टिंगू का सिर चकराने लगा। वह दौड़कर पिंगू को बुला लाया। कहा, "पिंगू! आज हमारे गुरु को कुछ हुआ है।"

वह आगे कुछ कहे उसके पहले रोबोट बोल उठा, "मुझे पुछ हुआ है पि तुझे! पुछ परता नहीं और गुरु पो दोष देता है।"

सुनकर पिंगू कहकहे लगाकर हंसने लगा।

टिंगू ने कहा, "अरे तुम क्यों हंसते हो?"

पिंगू बोला, "हंसता हूं इसलिए कि आज गुरुदेव पर पिंगू के पी का असर हुआ है।"

"यानी?"

"यानी कि बिचारे की जीभ लड़खड़ा गई है। यह 'क' नहीं बोल सकता। टाईपोग्राफी की कोई भूल के कारण इसे 'क' की जगह 'प' बोलना पड़ता है। इसलिए कुछ के बदले पुछ, करता के बदले परता बोलता है।

"आई सी," टिंगू को माजरा समझ में आया, "लेकिन ऐसा हुआ कैसे?"

उत्तर दिया यंत्रमानव ने, "ओवरवर्प, ओवरवर्प।"

"अरे, इतनी सी देर में ओवरवर्क कैसे हो गया? अभी तो चार ही कदम तुम्हें खींच लाए हैं!"

गुरुदेव ने झटपट जवाब दिया, "जैसे नए टी.वी.एस. ने शुरूआत में तीस पिलोमीटर से आगे जाने पो इन्पार पर दिया था। तो भी तुमने स्पीड पपड़ ली थी, तो गाड़ी अटपी थी पि नहीं? ऐसा ही हाल है हमारी गाड़ी पा। हम भी पारखाना हैं।"

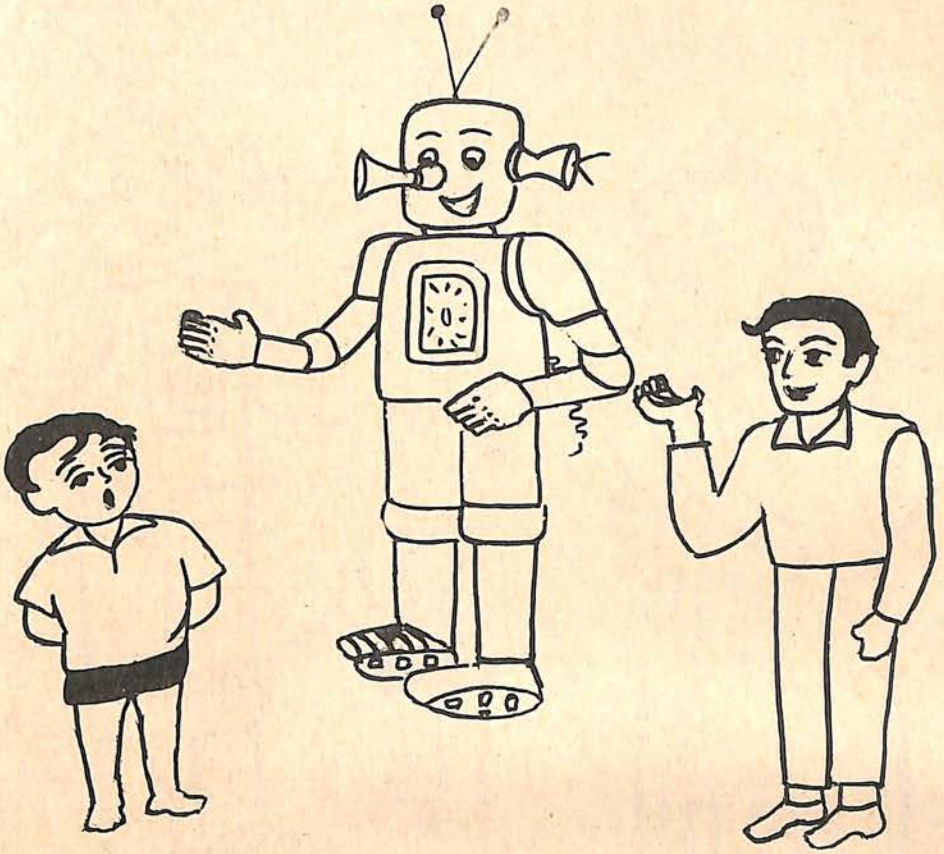

"अभी तुमने तेल से मेरी पूजा परने पी शुरूआत भी नहीं पी!"

पिंगू फिर हंसा, "वाह, फाईन! टिंगू अब हम इस यंत्रगुरु की तेल से पूजा करें?"

" 'तेल से पूजा' से तुम्हारा क्या मतलब है?"

"पूजा यानी ऑइलिंग। इस के सभी अंगों को तेल देना होगा।"

यंत्रगुरू ने कहा "उस पे पहले पेरोसिन से साफ परो।"

पिंगू बोला, "टिंगू ले आओ केरोसिन और कर दो सफाई!"

टिंगू बोला, "किंतु केरोसिन मिलता कहां है? जब से 1.70 का भाव बढ़कर 3.10 हुआ है तब से वह केरोसिन वाला भी दिखाई नहीं देता।"

"डूह!" यंत्रमानव चिल्लाया, "स्टोव से निपाल, लालटेन से निपाल! इमरजंसी में पठिन से पठिन रास्ते से भी चीज़ प्राप्त परनी चाहिए।"

"हां करनी चाहिए।" कहकर टिंगू गया और केरोसिन तथा तेल ले आया। उसने यंत्रमानव के सभी पुर्ज़े पहले केरोसिन से साफ किए। फिर तेल से पूजा की। सफाई करने के बाद वह बोला "पिंगू! अब इससे बोलो कि ठीक-ठीक बोले।"

पिंगू ने ऐसा वाक्य पूछा, जिसमें 'क' वाले शब्द अधिक आते हों, "बता रोबोट, काका ने काकी से कहा कि कांच के कबाट में से कुर्ता निकाल कर इस्त्री कर।"

यंत्रमानव ने वही वाक्य इस तरह उच्चारा, "पापा ने पापी से पहा पि पांच पे पबाट में से पुर्ता निपाल पर इस्त्री पर।"

पिंगू के चेहरे का रंग ही उड़ गया, बोला, "टिंगू, यह तो अब और भी ज़ोर से प-प करता है।"

अभी वे यंत्रमानव के बारे में बात कर ही रहे थे कि उन की दुर्गा काकी आ खड़ी हुईं। पूछा, "लड़को! तुम कहते हो कि यह तुम्हारा यंत्रमानव सब के नाम बोलता है। तो मेरा नाम बोल के बताए!"

टिंगू ने पिंगू की ओर देखा।

पिंगू ने टिंगू की ओर देखा।

काकी बोलीं, "अरे, एक दूसरे को क्या देखते हो? अपना तोता भी तो इसी तरह मेरा नाम बोलता है। रोज़ सुबह

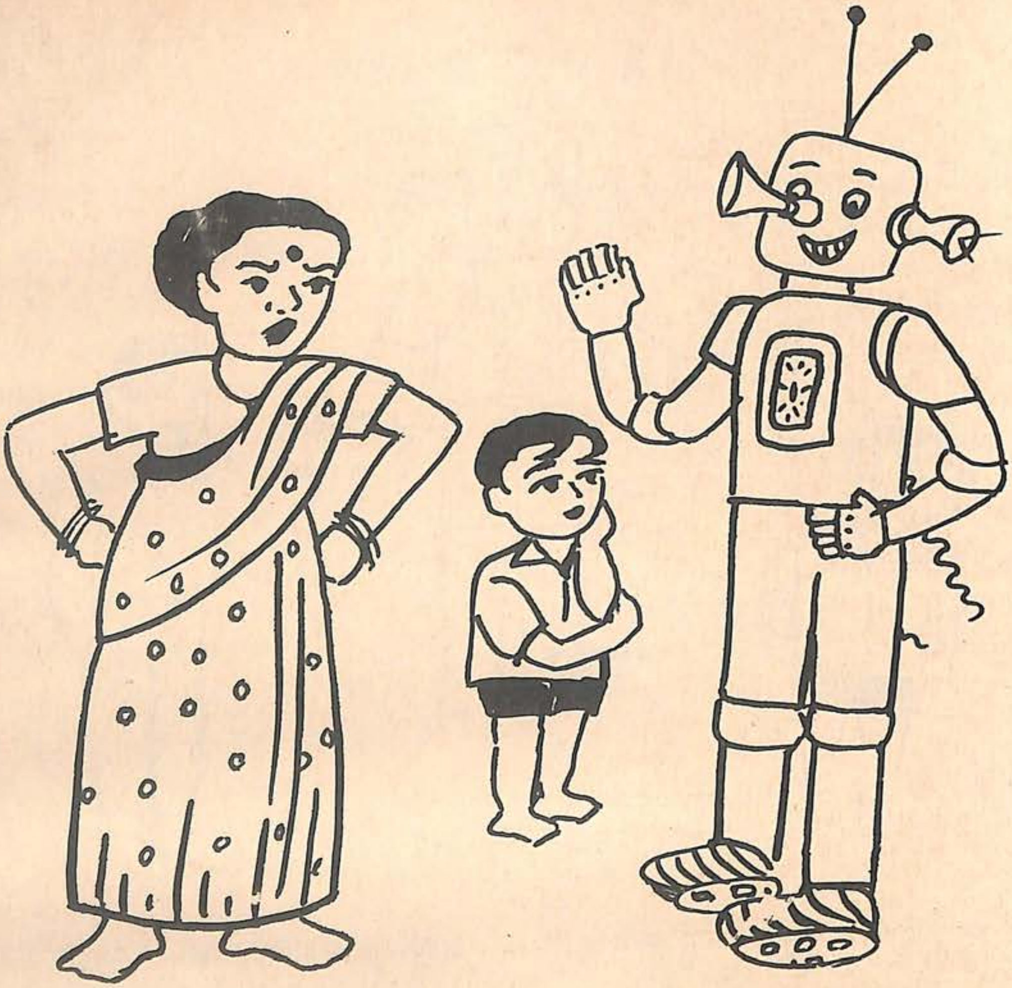

मीठी वाणी में बोलता है, 'काकी उठ'। इसी तरह बुलवाओ अपने यंत्रमानव से।''

टिंगू चुप रहा।

पिंगू भी चुप रहा।

काकी बोली, ''तुम नहीं बुलवाते तो मैं बुलवाती हूं। मुझे यंत्रों से बात करनी आती है।''

और काकी ने यंत्र मानव से कहा, ''बोल, काका।'' यंत्रमानव ने कह दिया, ''पापा।''

यह धमाल चल रही थी तभी कापड़िया काकूमल करमचंद पधारे। उन्होंने पूछा, ''क्या है काकी?''

काकी बोली, ''यह यंत्रमानव मुझे पापी कहता है। इसे कहा कि काकी बोल तो कहता है—पापी!''

कापड़िया बोले, ''रोबोट मेरा नाम तो अवश्य बोलेगा।'' उन्होंने बड़े प्रेम से कहा, ''बोलो रोबोट जी, कापड़िया...।''

यंत्रमानव ने तुरंत कह दिया, ''पापड़िया।''

कापड़ यानी कपड़े का व्यापार एकदम पापड़ बन गया। जोश में आकर उन्होंने कहा, ''ए रोबले का बच्चा! तू मुझे पापड़िया कहता है? तुझे मालूम है कि मेरा नाम कापड़िया काकूमल करमचंद है...!''

यंत्रमानव ने उच्चारा, ''पापड़िया पापूमल परमचंद।''

बस अब तो एक तरफ से काकी और दूसरी तरफ से कापड़िया काकूमल ने यंत्रमानव की पिटाई करनी आरंभ की। छाती की ओर से काकी की लात पड़ती थी तो पीठ की ओर से कापड़िया का पादूप्रसाद। इसी स्थिति में भी यंत्रमानव लगातार कहता रहा, ''पापी पापड़िया पापूमल, पापी पापड़िया पापूमल, पापी पापड़िया पापूमल, पापी पापड़िया पापूमल, पापी... पापी... पापी... पा... पा... पा... पी... पी... पी... पा... पी...!''

□ हरीश नायक
गुजराती से अनुवाद : हूदराज बलवाणी
सभी चित्र : आशा शर्मा

ज्वालामुखी कैसा दिखता होगा?

हम एक छोटा सा ज्वालामुखी बनाते हैं। इसके लिए हमें चाहिए—एक गमला और 1-1½ मीटर लंबा रबड़ का पाइप।

ज्वालामुखी बनाने के लिए खुली जगह में थोड़ी कच्ची ज़मीन ठीक रहेगी।

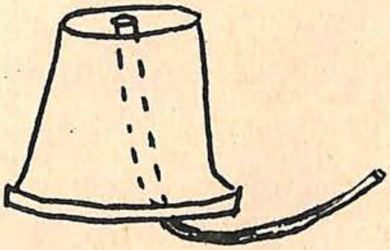

- गमले को उल्टा कर के रख दो।
- अब रबड़ के पाईप का एक सिरा गमले के पैंदे के छेद में फंसा दो और दूसरा सिरा नीचे से निकाल कर बाहर ले लो।

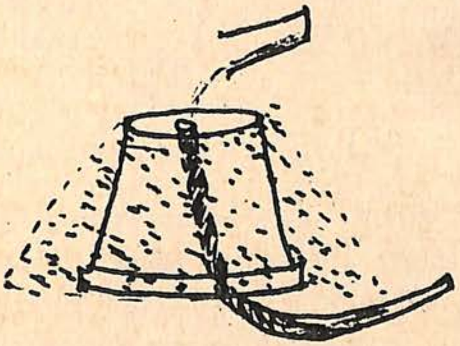

- गमले के चारों ओर मिट्टी का पहाड़ बना दो जिससे वह पूरी तरह ढक जाए।
- एक गिलास में आटे और पानी का, पतला घोल बना लो (आटे की जगह कुछ और भी लिया जा सकता है)।
- अब इस घोल को गमले के छेद में से निकल रहे पाईप में डालो, जब तक कि पाईप भर न जाए।

- अब पैंदे को भी मिट्टी से ढक दो ताकि केवल मिट्टी का पहाड़ नज़र आए (ध्यान रहे, छेद पर बहुत ज़्यादा मिट्टी नहीं डालनी है।)।

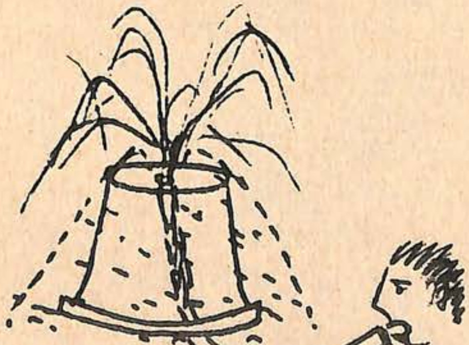

- अब ज्वालामुखी तैयार है। तुम पाईप के बाहर वाले सिरे में तेज़ी से फूंक मारो। पाईप में भरा हुआ घोल पहाड़ की चोटी को फोड़ता हुआ फव्वारे की तरह बाहर आएगा।
- **जब असली ज्वालामुखी फटता है तो इसी तरह लावा बाहर आता है।**
- ज्वालामुखी के शान्त होने के बाद हमें नज़र आएगा कि पहाड़ की चोटी पर एक छोटा सा गड्ढा बन गया है। **ज्वालामुखी में यह गड्ढा बहुत विशाल होता है और इसे क्रेटर कहते हैं।**

पृथ्वी के भीतर, बहुत गहराई पर चट्टानें पिघले हुए रूप में होती है क्योंकि यहां का तापमान 1000° सेण्टीग्रेट से भी ज़्यादा होता है। इस द्रव को मैगमा कहते हैं। भीतर की गर्मी और दबाव के कारण मैगमा हरदम पृथ्वी से बाहर आने की कोशिश में रहता है। और जहां कहीं भी दरारें मिलती हैं वहीं से यह अपना रास्ता बनाकर यह ज्वालामुखी के रूप में फट पड़ता है। ज्वालामुखी से निकलने वाला मैगमा लावा कहलाता है। बाहर की ठंडक में लावा जम कर पत्थर हो जाता है।

ज्वालामुखी उन पर्वतों को कहते हैं जिनमें से समय-समय पर लावा निकलता है।

साकुराजिमा (जापान), माउन्ट फयूजी (जापान), माओना लोआ (हवाई) ये दुनिया के बड़े ज्वालामुखी पर्वतों में से हैं।

□ **बाबूलाल पाटोदिया, लीवाली, जयपुर**
□ **कोमल श्रीवास्तव, जयपुर**

अवलोकन करो

अपने आसपास घूमता कुत्ता ऐसा प्राणी है जो कहीं भी, किसी भी गली में मिल जाता है। हर कुत्ता अपनी गली का शेर होता हैं। इसलिए कई बार हमें गलियों से संभल कर गुजरना होता है। अगर तुम कुत्तों का ध्यान से अवलोकन करो तो उनकी कुछ ऐसी भाव-भंगिमाओं से परिचित हो सकते हो, जिनसे पता चलेगा कि कुत्ते जी का इरादा क्या है?

कुत्ते की भाषा

कुत्ते अपनी पूंछ, कान, होंट, बाल आदि की मदद से अपनी बात व्यक्त करते हैं। पूंछ हिलाना खुशी का संकेत है (जिसे आमतौर पर मुहावरे में चापलूसी का पर्याय माना जाता है)। अगर कुत्ता अपनी पूंछ को टांगों के बीच दबाता है तो इसका मतलब है कि वह डरा या घबराया हुआ है।

झूठी धमकी

होंट थोड़े तने रहते हैं। कान भी थोड़े पीछे की ओर मुड़े रहते हैं। पूंछ थोड़ी झुकी हुई रहती है। ऐसी स्थिति अगर है तो समझो कुत्ता काटने की धमकी दे रहा है। पर वह तुमसे डरा हुआ भी है। अगर तुम थोड़ी सख्ती से पेश आओगे तो शायद वह भाग भी जाए। हां, काटने की संभावना कम है।

धमकी, मगर सिर्फ डराने के लिए

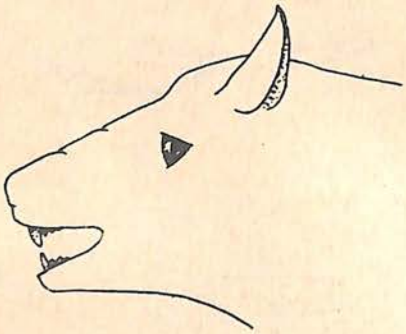

जब कुत्ता हमें धमकाना चाहता है तब उसके होंट सामान्य स्थिति में होते हैं, तने हुए नहीं। कान खड़े रहते हैं। पूंछ ऊपर तुरही की तरह उठी रहती है। कुत्ता कह रहा होता है कि 'भाग जाओ, वरना काट लूंगा।' और अगर तुम उसके पास गए तो शायद वह काट भी ले। ध्यान रखो, ऐसी स्थिति में वह तुमसे डर नहीं रहा है।

असली धमकी

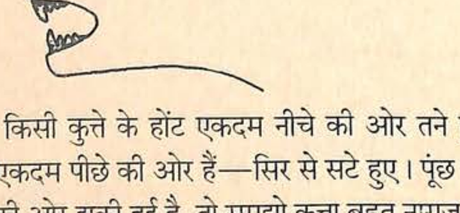

अगर किसी कुत्ते के होंट एकदम नीचे की ओर तने हुए हैं। कान एकदम पीछे की ओर हैं—सिर से सटे हुए। पूंछ एकदम नीचे की ओर झुकी हुई है, तो समझो कुत्ता बहुत नाराज़ है और डरा हुआ भी। हो सकता है वह संकट में हो या परेशान। अगर तुम उसके पास गए तो निश्चित ही तुम्हें काट लेगा।

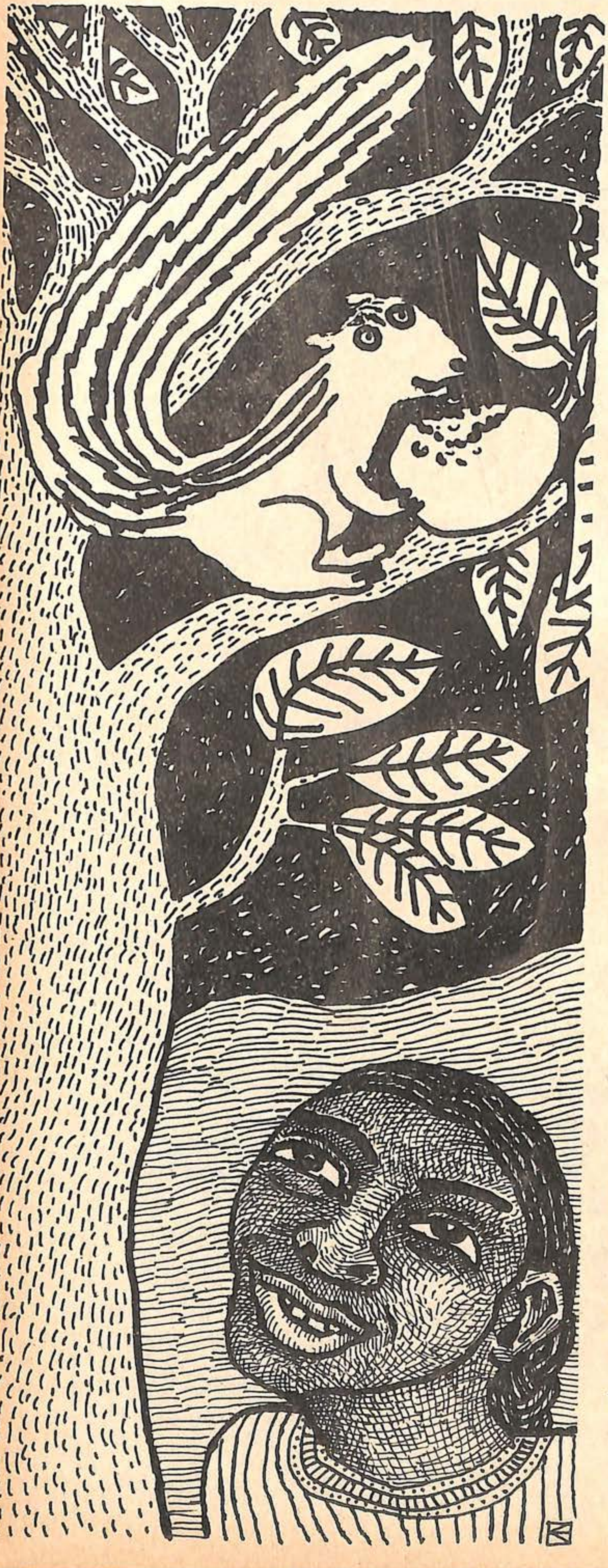

कट्टो गिलहरी

आम के पेड़ पर एक गिलहरी रहती थी। गिलहरी बहुत अच्छी थी। उसे फल खाना बहुत अच्छा लगता था। वो आम खाती थी, अमरूद खाती थी। जामुन खाती थी और फालसे भी खाती थी। जब देखती कि खूब अच्छे-अच्छे अमरूद लगे हैं पेड़ पर, तो आम पर से उतरती और अमरूद के पेड़ पर चढ़ जाती। फिर अपने दोनों पिछले पैरों पर बैठकर दोनों हाथ से पकड़ कर कुट कुट कुट कुट अमरूद खाती। जब देखती कि पेड़ के पास कोई आ रहा है तो दौड़ कर अपने आम पर चढ़ जाती। गिलहरी खूब फल खाती थी न इसीलिए इतना तेज़ दौड़ती थी। उसको कोई कभी नहीं पकड़ सकता था। और उसके बाल भी खूब सुंदर थे।

टिया को गिलहरी बहुत अच्छी लगती थी। टिया गिलहरी से दोस्ती करना चाहती थी पर गिलहरी थी कि टिया को देखते ही भाग जाती थी। तो टिया को गिलहरी पर गुस्सा आया और वो उसे चिढ़ाने लगी—

कट्टो गिलहरी चाबे पान
उड़ गई टोपी रह गए कान

टिया हाथ हिला-हिला कर गिलहरी को चिढ़ा रही थी। अब गिलहरी को भी मज़ा आने लगा। वह पूंछ के बल बैठ कर टिया को देखने लगी, भागी नहीं। इस तरह दूर ही दूर से टिया की और गिलहरी की दोस्ती हो गई।

चित्र : कैरन

☐ सुधा चौहान

माथापच्ची

5

5 + 2

1 + 5 2

2 1 + 5 4

1 2 + 3 4 + 5

इस पहेली में शब्दों का एक पिरामिड बनता है। पिरामिड के आधार पर एक शब्द है जिसका पर्यायवाची 'नीच' है। इस शब्द के प्रत्येक स्वर और व्यंजन को 1 से 5 तक के नंबर दिए गए हैं। इनमें से एक स्वर या व्यंजन निकालने पर पिरामिड की अगली सीढ़ी का शब्द बनता है। + चिह्न स्वर और व्यंजन का जोड़ बताता है।

(2)

पान या पुलाव आदि में एकाध लौंग या इलायची डालने पर उसका स्वाद एकदम बढ़िया हो जाता है। हम रोज़ रसोई में गरम मसालों का प्रयोग करते हैं। पर ये आते कहां से हैं? हमारा मतलब है कि हम यह तो जानते हैं कि अधिकांश पेड़-पौधों से पाए जाते हैं। पर किन अंगों से? अच्छा बताओ निम्न मसाले पेड़-पौधों के किन अंगों से मिलते हैं :

1. अदरक
2. दालचीनी
3. कालीमिर्च
4. राई
5. लौंग

(3)

एक नाला खोदने के लिए कुछ मज़दूरों को काम पर लगाया गया। यदि सभी एक साथ काम शुरू करते तो काम 24 घंटे में खत्म हो जाता। पर वास्तविकता में एक मज़दूर ने काम शुरू किया। कुछ समय बाद दूसरा मज़दूर आया; उतना ही समय और बीतने पर तीसरा आया; फिर उतना ही समय बीतने पर चौथा आया; उसी तरह अंतिम मज़दूर तक सभी एक निश्चित अंतराल पर आते गए। हिसाब लगाने पर पता चला कि जो सबसे पहले आया, उसे अंतिम वाले की तुलना में 11 गुना अधिक समय तक काम करना पड़ा।

सबसे अंत में आने वाले मज़दूर ने कितने समय काम किया?

(4)

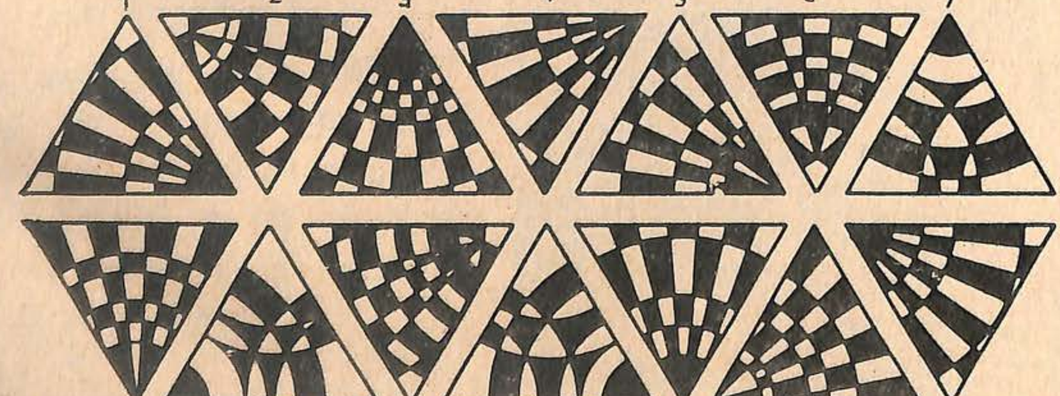

यहां 14 त्रिभुज दिए गए हैं। इनमें से दो त्रिभुजों की अंदर की रचना एक समान है। खोजो तो भला वे कौन से त्रिभुज हैं!

अंकों का चमत्कार

1. शून्य तथा 1 से 9 तक के अंकों को भिन्न में इस प्रकार लिखो कि उनका मूल्य 1 प्राप्त हो।
2. अंक 9 का (भिन्न में) पांच बार इस तरह प्रयोग करो कि मूल्य 10 प्राप्त हो।
3. शून्य तथा 1 से 9 तक के अंकों को भिन्न में इस प्रकार लिखो कि मूल्य 100 प्राप्त हो।

□ डॉ. जमना प्रसाद बायनी, बीकानेर

(5)

नीचे दस अधूरे शब्द दिए गए हैं। इनके आगे दो व्यंजन जोड़कर इन्हें पूरा करो। हां एक शर्त है। शर्त यह है कि सभी शब्दों में वही दो व्यंजन (उसी क्रम में) प्रयोग करने होंगे।

—— कमल	—— मचंद
—— इत	—— तब
—— तूत	—— छुला
—— बला	—— कट
—— दौना	—— घा

(6)

चाय से भरे दो डिब्बों की आकृति बिलकुल समान है। पहले डिब्बे का भार 2 किलोग्राम है और उसकी ऊंचाई 12 सें.मी. है। दूसरे का भार 1 किलोग्राम है और उसकी ऊंचाई 9.5 सें.मी. है। डिब्बों में केवल चाय का वजन बताओ।

(7)

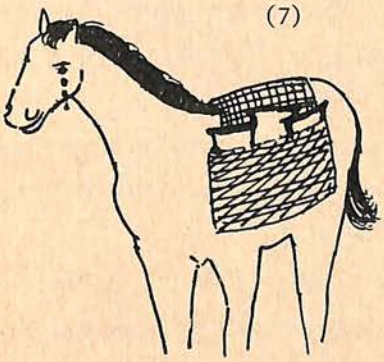

एक घोड़ा और एक गधा पीठ पर बोरियां लादे साथ-साथ जा रहे थे। घोड़ा रो रहा था कि उस पर बहुत भारी बोझ है।

गधे ने पूछा, "तू क्यों रो रहा है?"

घोड़े ने कहा, "यदि मैं तुम्हारी एक बोरी ले लूं, तो मेरा बोझ तुमसे दुगना हो जाएगा। लेकिन यदि तुम मेरी एक बोरी ले लेते, तो तुम्हारा बोझ मेरे बराबर हो जाता।"

बताओ, कितनी बोरियां घोड़ा ढो रहा था और कितनी गधा!

वर्ग पहेली-16

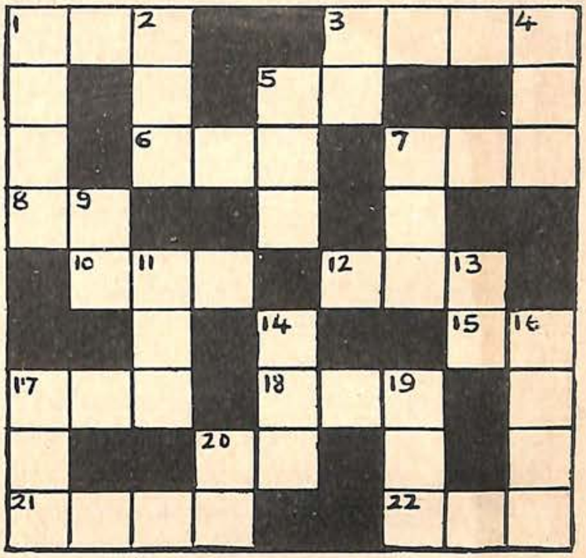

संकेत : बाएं से दाएं

1. मात के बाद आधा मन, दुख करना (3)
3. छाजन मतवाला में लोगों की बात (4)
5. सांप की पूंछ और गज का सिर बने, पैर (2)
6. औषधी के बाद आधा तन, बने स्हायी का बरतन (3)
7. सुस्ती (3)
8. हमारे शरीर में आक्सीजन का वाहक (2)
10. सूजी के पर्याय में ना, यात्रा शुरू करना (3)
12. भार तले देश (3)
15. इतना ही, वाहन? (2)
17. दया में सरिता का धड़, समंदर बना देगा (3)
18. जिसकी संपत्ति हो (3)
20. एक पेड़ या दर्जन भर महीने (2)
21. इंसान को खाने वाले (4)
22. सब नंगें हैं... में (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. माल का धनी, लाल मामा (4)
2. आरामवाद में पीप (3)
3. दुनिया कहो या पानी भरने का बरतन (2)
4. सूर्य, चंद्रमा और एक पक्षी भी (3)
5. चरित्र की गिरावट (3)
7. इज़्ज़त (3)
9. सुंदरता का मापदंड (3)
11. एक समय का... है (3)
13. कब? (2)
14. मालक गड़बड़ है, पर है गज़ब (4)
16. आना, मिलना या भेंट (4)
17. मदन का उल्टा सीधा अत्याचार (3)
19. कल के बाद हमारा सिर झगड़ा करेगा (3)
20. गवाह (2)

धारावाहिक-7

नन्हा राजकुमार

अब तक तुमने पढ़ा

लेखक को बचपन में बड़ों ने चित्र बनाने से हतोत्साहित किया तो वह पायलट बन बैठा। अपनी एक यात्रा के दौरान उसे रेगिस्तान में जहाज़ उतारना पड़ा। वहां उसकी भेंट एक छोटे से राजकुमार से हुई। राजकुमार ने अपने ग्रह के बारे में बहुत-सी विचित्र बातें बताईं। उसने अपनी एक यात्रा का ज़िक्र किया, जिसके दौरान उसकी मुलाकात, फूल, राजा, दम्भी, शराबी, व्यवसायी, बत्ती जलाने वाले और भूगोलवेत्ता से हुई। यात्रा करता हुआ वह पृथ्वी पर पहुंचा। पृथ्वी पर उसे एक सांप मिला। सांप ने उसे पृथ्वी और आदमियों के बारे में बताया। फिर उसकी मुलाकात तीन पंखड़ियों वाले एक फूल से हुई। भटकता हुआ जब वह आगे पहुंचा, उसे गुलाब के फूल मिले। एक लोमड़ी मिली जो उससे प्रेम करना चाहती थी। रेल गाड़ियों को गुजारता प्वाइन्ट्समैन मिला। दुकानदार मिला। और उसकी यात्रा का विवरण खत्म हो गया। .... इस किस्त के साथ ही यह धारावाहिक समाप्त हो रहा है।

राजकुमार बोला, "आदमी लोग तेज़ गाड़ियों में भागते फिरते हैं, बिना जाने कि उन्हें किस चीज़ की तलाश है। बस कुछ करते रहते हैं तेली के बैल की तरह..."

फिर उसने कहा, "क्या ज़रूरत है..."

हम लोग जिस कुएं पर पहुंचे थे वह सहारा रेगिस्तान के अंध कुओं की तरह नहीं था। यहां के कुएं तो सीधे से रेत में किए गए सूराख से लगते हैं। यह तो किसी गांव का कुआं लगता था। लेकिन गांव कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था। मुझे लगा कि वह सब सपना हो।

"कितनी अज़ीब बात है! सब कुछ तैयार है, - घिर्री, रस्सी, बाल्टी।" उसे हंसी आ गई। उसने रस्सी को छूकर देखा, घिर्री पर रस्सी डाल कर उसे नचाने लगा। जिससे आवाज़ हो रही थी।

"तूने सुना हम लोगों ने कुएं को जगा दिया और अब वह गा रहा है।"

मैं नहीं चाहता था कि उसे कष्ट हो। "तेरे लिए बहुत भारी है वह। ला मैं भरता हूं पानी।"

मैंने धीरे-धीरे बाल्टी को कुएं में उतारा, पानी पर बाल्टी रुकी। मेरे कानों में घिर्री के फिसलने का संगीत गूंज रहा था और हिलते पानी में धूप की छाया हिल रही थी।

"मुझे इसी पानी की प्यास है। मुझे पानी दो...।" मेरी समझ में आ गया कि वह क्या ढूंढ़ रहा था।

मैंने उसके होठों तक बाल्टी उठाई। उसने आंखें बंद कर के गट-गट करके पानी पी लिया। उसका पानी पीना उत्सव की तरह भला लग रहा था।

वह साधारण पानी नहीं था, वह सितारों की छांव में हमारी यात्रा, घिर्री के संगीत और बाजुओं के श्रम से जन्मा था। मन के लिए बलदायक था जैसे एक उपहार। जब मैं छोटा था तो क्रिसमस में घर में सजा उपहारों से लदा पेड़, गिर्जाघर में प्रार्थना का संगीत, मुस्कराहटों की मधुरता मिल कर उपहारों से मिली खुशी पर छा जाते थे।

"इस धरती के आदमी," राजकुमार बोला, "एक बगीचे में हज़ारों गुलाब लगते हैं... और फिर उन्हें वह नहीं मिलता जिसकी उन्हें तलाश है...।"

"वे उसे ढूंढ़ नहीं पाते...," मैंने प्रतिध्वनि की।

"जब कि जिसकी उन्हें तलाश है वह एक फूल, थोड़े से पानी में ही मिल सकता था..."

"निश्चित ही," मैंने कहा।

राजकुमार ने बात पूरी की, "आंखें अंधी होती हैं। हृदय से ढूंढ़ना चाहिए।"

मैंने भी पानी पी लिया था। सांस ठीक से चलने लगी थी। सूर्योदय के समय रेत का रंग शहद जैसा हो जाता है मैं इस रंग के कारण भी खुश था। आखिर दुखी क्यों होउं मैं...!

"तुझे अपना वादा पूरा करना चाहिए," मेरे पास आकर बैठता हुआ वह बोला।

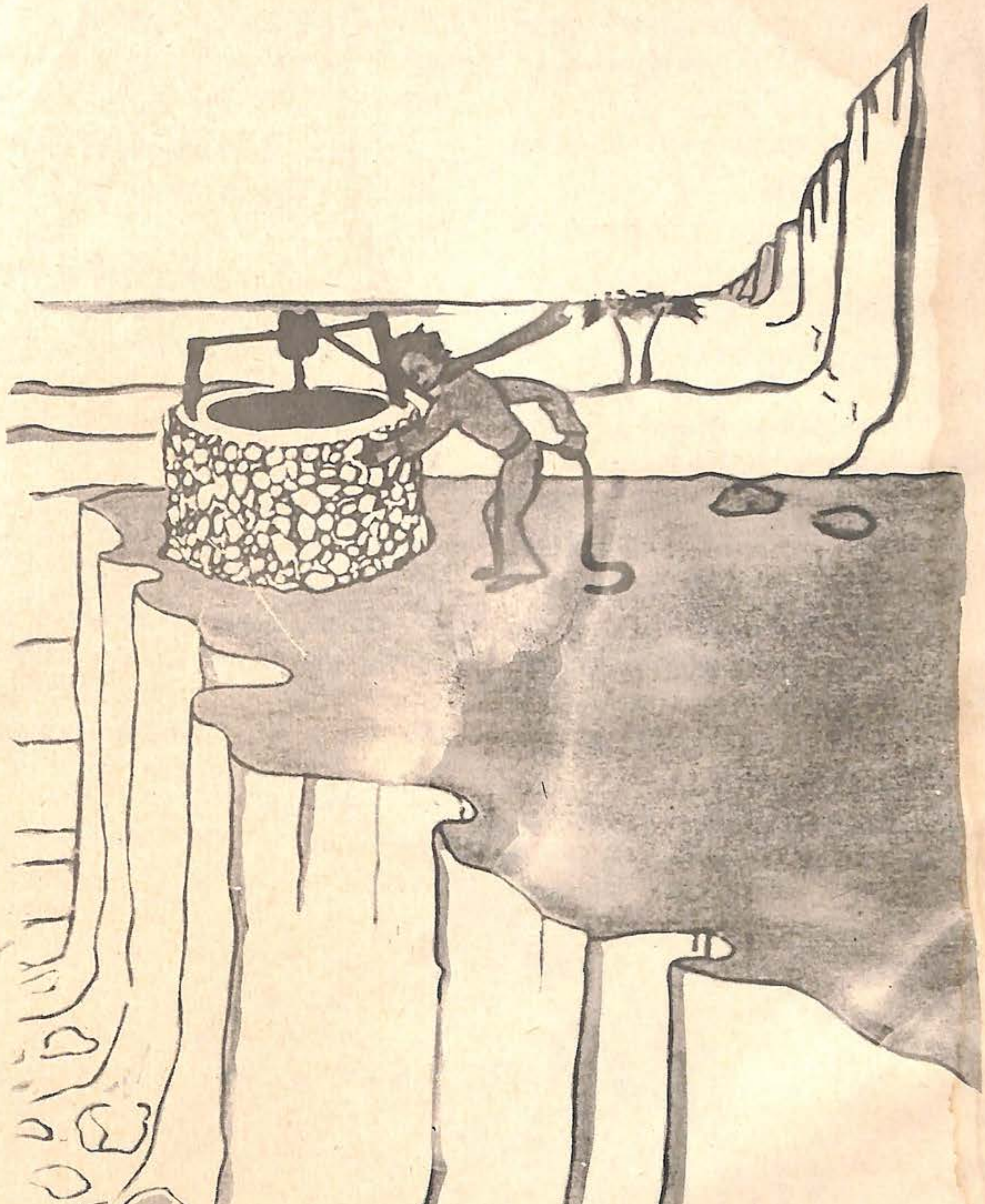

"कौन सा वादा!"

"वही जाबा भेड़ का मुंह बंद करने के लिए... फूल का दायित्व है मुझ पर।"

मैंने जेब से रेखा चित्रों की कापी निकाली। चित्रों को देख कर हंसता हुआ बोला, "बाओबाब के चित्र गोभी जैसे लगते हैं।"

"धत्।" अपनी समझ से मैंने बाओबाब के चित्र बहुत अच्छे बनाए थे।

"और लोमड़ी... उसके कान... जैसे सींग हों... कितने बड़े हैं।" वह हंसता ही रहा।

"तू मेरे साथ नहीं रहा नन्हे-मुन्ने मुझे खुले और बंद सांपों के अलावा कुछ बनाना नहीं आता था।"

"ओह! कोई बात नहीं! बच्चे समझ लेंगे।"

मैंने पेंसिल से एक 'जाबा' बनाया। उसको देते हुए डर ही लग रहा था। कि वह क्या कहेगा, "तेरी पता नहीं क्या-क्या योजनाएं हैं... ।"

मेरी बात से अलग जाकर उसने कहा, "जानते हो मेरा इस धरती पर आना... कल उसको एक वर्ष हो जाएगा।"

थोड़ी देर चुप रहा फिर बोला, "मैं बिलकुल यहीं कहीं उतरा था... ।"

वह लाल हो गया।

न जाने क्यों एक बार फिर एक अजीब सी पीड़ा महसूस की मैंने। उसी समय एक प्रश्न उठा, "अच्छा तो यह संयोग नहीं था कि आठ दिन पहले, जब हमारी मुलाकात हुई, तो तू बस्ती से दूर, बहुत दूर, इस वीरान में अकेले घूम रहा था। तू उसी स्थान की ओर लौट रहा था। जहां तू उतरा था।"

नन्हे राजकुमार के मुंह पर फिर लाली दौड़ गई।

सकुचाते हुए मैंने फिर कहा, "उस दिन की वर्षगांठ के कारण न?"

राजकुमार फिर शर्मा गया। सवालों के जवाब नहीं देता था, कहा, "पर जब कोई शर्मा जाए तो उसका मतलब 'हां' होता है। है न?"

"आह! मुझे डर लग रहा है... ।"

उसने उत्तर दिया, "अब तुझे काम करना चाहिए। अपने जहाज़ के पास जाना ही चाहिए, मैं तेरा यहीं इन्तज़ार करूंगा। कल शाम को आना... ।"

लेकिन मैं आश्वस्त नहीं हुआ। मुझे लोमड़ी की याद आई। किसी के निकट जाने का अर्थ होता है आंसुओं को निमंत्रण देना...!

उस कुएं के पास ही एक पत्थर की दीवार का खण्डहर था। दूसरे दिन शाम को जब मैं काम कर के वहां लौटा तो नन्हा राजकुमार उंचाई पर पैर लटकाए बैठा हुआ था। मैंने सुना कि वह किसी से बातें कर रहा था।

"तुझे याद नहीं!," वह कह रहा था। "एक दम यहां नहीं..."

दूसरी आवाज़ ने उससे निश्चित ही कुछ कहा होगा क्योंकि राजकुमार ने फिर ज़ोर देकर कहा, "तुम्हें याद नहीं! आज ही है वह दिन हां वह जगह नहीं है..."

मैं दीवाल की ओर बढ़ा। मैंने किसी को नहीं देखा वहां, कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ी। राजकुमार ने फिर किसी से कहा, "...निश्चित ही। देखना मेरे उतरने के निशान बने हैं रेत में। मेरा इंतज़ार करना मैं रात तक वहां पहुंच जाऊंगा।"

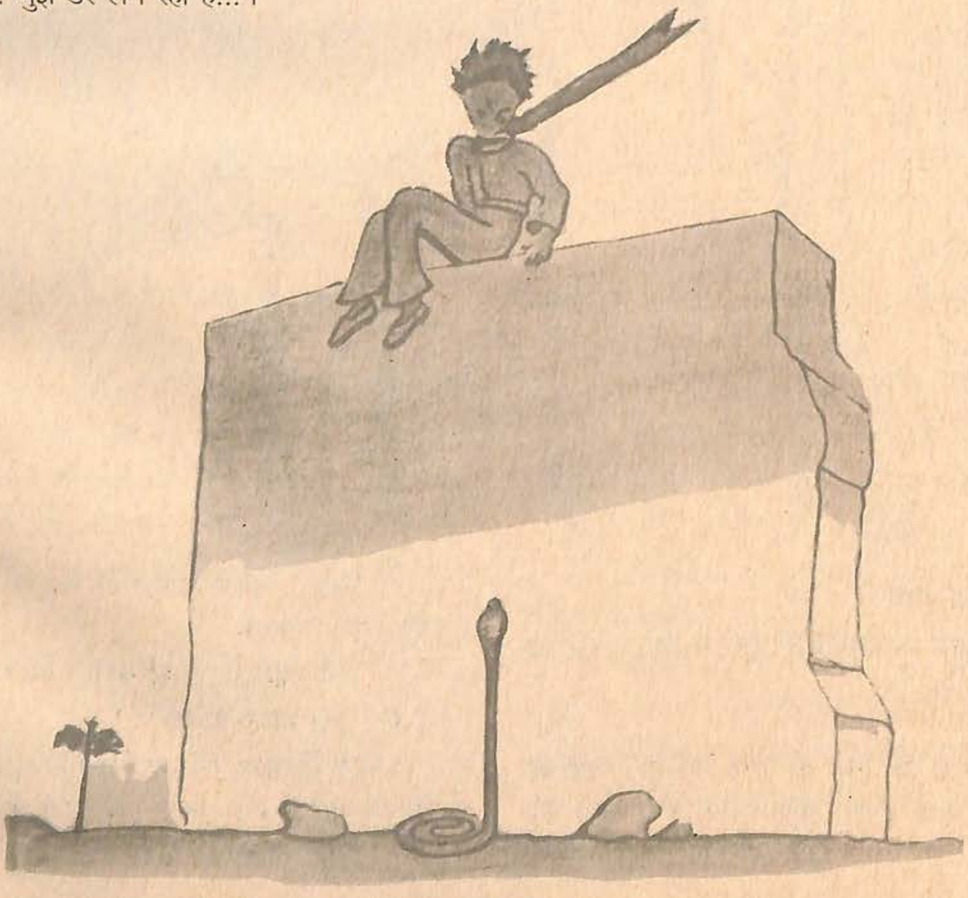

मैं दीवार से कुल बीस मीटर दूर था फिर भी मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

एक चुप्पी के बाद राजकुमार ने फिर कहा, "तेरा ज़हर बहुत तेज़ है न? मुझे बहुत देर तक तकलीफ तो नहीं होगी?"

मेरे दिल की धड़कन रुकती सी लगी। मैं रुक गया पर समझ में फिर कुछ नहीं आ रहा था।

"अब जा तू, उसने कहा... मैं उतरना चाहता हूं।"

मैंने दीवार के नीचे झुक कर देखा और एक चीख निकल गई। यहीं राजकुमार की ओर मुखातिब था वह—पीला सांप जिसका काटा आधा मिनट में दम तोड़ देता है। हड़बड़ाहट में मैंने जेब से पिस्तौल निकाली और दौड़ने को हुआ पर मेरी आवाज़ पर सांप वैसे ही नीचे सिकुड़ गया जैसे फव्वारा बंद होने पर पानी की धार, और धीरे-धीरे एक खनखनाहट के साथ पत्थरों के बीच रेंग गया।

भागकर मैं दीवाल तक पहुंचा और नन्हे-मुन्ने से राजकुमार को बाहों में भर लिया। उसका चेहरा बर्फ जैसा हो रहा था।

"क्या हुआ? अब तू सांपों से बात करता है?"

मैंने उसका सुनहरा मफलर ढीला किया। उसकी कनपटी पर पानी छिड़का और पानी पिलाया। मेरी हिम्मत नहीं हुई कि उससे कुछ और पूछूं। मुझे चुपचाप देखता रहा और मेरी गर्दन में अपनी बाहें डाल दीं। गोली खाकर मरती हुई चिड़िया की धड़कन की तरह मुझे उसकी धड़कन सुनाई पड़ रही थी।

उसने मुझसे कहा, "मैं बड़ा खुश हूं कि तेरा जहाज़ ठीक हो गया। अब तू घर लौट सकेगा..."

"कैसे मालूम तुझे?"

मैं तो उससे यही बताने आया था कि आशा नहीं थी पर मैं जहाज़ ठीक करने में सफल हो गया था।

मेरे सवाल का जवाब दिए बिना अपनी ही बात करने लगा, "मैं भी आज अपने घर जा रहा हूं...।"

उदास होकर वह बुदबुदाया, "कितनी दूर है... कितना मुश्किल है...!"

मैंने महसूस किया कि कुछ असाधारण घट रहा था। मैंने उसे एक बच्चे की तरह बाहों में कस लिया था फिर भी लग रहा था कि वह नीचे किसी खाई की ओर बहकर मेरी पकड़ से बाहर जा रहा हो और मैं असहाय होऊं...!

वह गम्भीर और कहीं दूर खोया-खोया सा लग रहा था, "मेरे पास तेरी दी हुई भेड़, उसको बंद करने वाला बक्सा और जाबा है...।"

विषादपूर्ण मुस्कान दिखाई पड़ी उसके चेहरे पर।

मैं इंतज़ार करता रहा। लगा कि वह सहज हो रहा है धीरे-धीरे।

"नन्हे-मुन्ने तुझे डर लगा था...।"

डर तो लगा ही था लेकिन वह धीरे से हंसा, "आज शाम को और डर लगेगा।"

जैसे कुछ टूट गया हो अंदर से। मेरी नसें ठंडी पड़ने लगीं। मुझे लगा कि यह ख्याल मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा कि यह हंसी मैं आखिरी बार सुन रहा हूं। वह हंसी मेरे लिए रेगिस्तान में मिले पानी के सोते जैसी थी।

"नन्हे-मुन्ने! मैं तुझे फिर हंसते सुनना चाहता हूं...!"

लेकिन उसने मुझसे कहा, "आज रात एक साल पूरा हो जाएगा। मेरा ग्रह उस जगह के ऊपर आ जाएगा जहां मैं उतरा था पिछले साल...!"

"नन्हे-मुन्ने! बोल यह एक दुःस्वप्न जैसा है कि नहीं? यह सांप, मिलने की बात, तेरा ग्रह...!"

मेरे सवाल का जवाब नहीं मिला। वह बोला, "खास बात दिखाई नहीं पड़ती।"

"यह तो है..."

"फूल ही की बात लो। अगर तुझे किसी फूल से प्यार है, जो किसी दूरके तारे पर खिला हो तो तुझे लगेगा जैसे सारे सितारे खिल उठे हों।"

"लगेगा तो...!"

"जैसे पानी की ही बात है। कल जो पानी तूने मुझे पीने को दिया वह घिर्री और रस्सी के कारण संगीत सा लगा... याद... है न... ...बढ़िया था वह पानी।"

"था तो!"

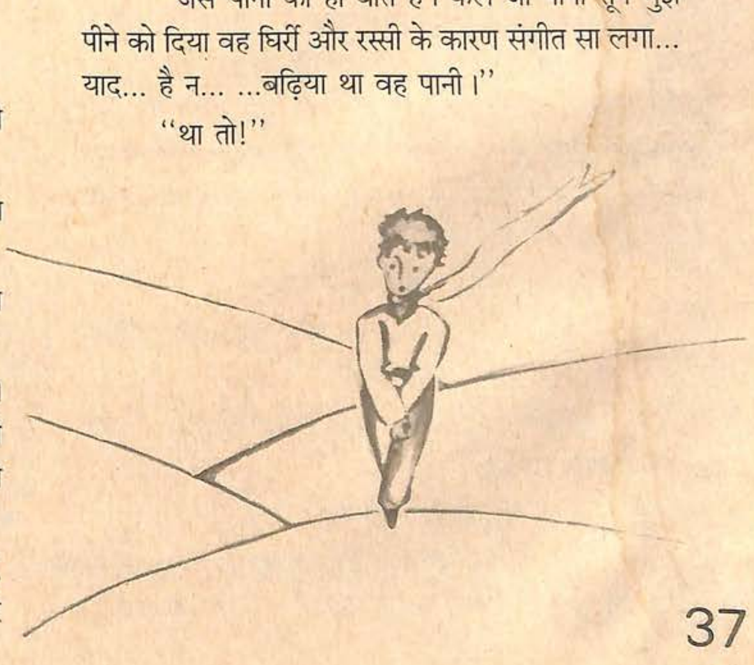

"रात को सितारों की ओर देखना। मेरा ग्रह इतना छोटा है कि यहां से दिखेगा भी नहीं। लेकिन यह अच्छा ही है। मेरा तारा इन्हीं तारों में से एक होगा और तुझे इन सबको देखना अच्छा लगेगा... ये सब तेरे दोस्त रहेंगे और फिर मैं तुझे एक उपहार भी दूंगा...!"

वह हंसने लगा।

"सच कितनी अच्छी लगती है तेरी हंसी मेरे नन्हे-मुन्ने!"

"यही तो है मेरा उपहार जैसे कि पानी...!"

"क्या मतलब?"

"हर कोई सितारों को अपनी अपनी तरह देखता है। किसी के लिए ये मार्ग दर्शक का काम करते हैं। दूसरों के लिए टिमटिमाते दीपों के अतिरिक्त कुछ नहीं। वैज्ञानिकों के लिए वे समस्याएं हैं। जिस व्यवसायी से मैं मिला था उसके लिए वे धन हैं। लेकिन ये सारे सितारे चुप रहते हैं। तेरे पास ऐसे सितारे होंगे जैसे किसी के नहीं।"

"क्या मतलब?"

"जब तू आसमान की ओर देखेगा रात को तो चूंकि मैं भी उन सितारों से एक पर होऊंगा, तुझे लगेगा कि सारे सितारे हंस रहे हों। इस तरह तेरे सितारों को हंसना भी आएगा।"

और वह फिर हंसने लगा।

"और जब तुझे ढाढस हो जाएगा (आदमी ढाढस बंधा ही लेता है अपने को) तो तुझे यह सोच कर अच्छा लगेगा कि तू मुझसे मिला था। तू हमेशा-हमेशा के लिए मेरा दोस्त बना रहेगा। तेरा मेरा साथ हंसने को जी चाहेगा और तू कभी-कभी ऐसे ही मज़े के लिए अपनी खिड़की खोल देगा। तेरे दोस्त आसमान की ओर देख कर तुझे हंसते देख कर चकित रह जाएंगे तब उनसे कहना, मुझे सितारों को देख कर हंसने का मन करता है वे तुझे पागल समझेंगे। अच्छा बेवकूफ बनाया मैंने तुझे!"

वह फिर हंसने लगा।

"जैसे मैंने तुझे सितारों की जगह छोटी-छोटी घंटियां दे दी हों जिन्हें हंसना आता हो।"

वह फिर हंसा और गंभीर हो गया, "यह रात... जानते हो... आना मत।"

"नहीं, मैं तुझे विदा करूंगा।"

"तुझे लगेगा कि मुझे कष्ट हो रहा है... ऐसा लगेगा कि मेरी मृत्यु हो रही है। ऐसा ही होता है यह, यह मत देखना। क्या ज़रूरत... मत।"

"मैं तुझे जाने नहीं दूंगा।"

वह चिन्तित था।

"यह मैं इसलिए कह रहा हूं... सांप की वजह से, ऐसा हो कि वह मुझे काटे न—सांप होते ही हैं दुष्ट। महज़ खुशी के लिए काट सकते हैं...।"

"मैं तेरे पास नहीं जाऊंगा।"

वह अचानक थोड़ा आश्वस्त लगा। वह बोला, "लेकिन दूसरी बार काटने पर उसका असर ज़हरीला नहीं होता...।"

मैंने उस रात उसे रवाना होते नहीं देखा। चुपचाप वह कहीं चला गया था। जब मैं उसे ढूंढ़कर उस तक पहुंचा वह निर्णय ले चुका था और तेज़ कदमों से आगे बढ़ा जा रहा था। उसने इतना ही कहा, "अच्छा! तू...?"

उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। अंदर से उद्विग्न था वह, "तूने ठीक नहीं किया।" राजकुमार बोला, "तुझे दुख होगा। लगेगा कि मैं मर रहा हूं पर वास्तविकता कुछ और होगी..."

मैं चुप था।

"समझ रहे हो न! कितनी दूर जाना है। मैं इस भारी शरीर को वहां तक नहीं ले जा सकता।"

मैं कुछ बोल नहीं पा रहा था।

वह थोड़ा हतोत्साहित लगा पर फिर हिम्मत करके उसने कहा, "कितना अच्छा लगेगा। मैं भी सितारों को निहारूंगा। सारे तारे घिर्री वाले कुओं जैसे लगेंगे। सब मेरी अंजुली में पानी भरते से लगेंगे...।"

मैं चुप ही था।

"कितना मज़ा आएगा। तेरे पास होंगी करोड़ों घंटियां और मेरे पास करोड़ों सोते...।"

आगे वह भी कुछ बोल नहीं सका। उसकी आंखों से भी आंसू झरने लगे थे...।

कहने लगा, "मुझे अकेले जाने दो वहां।"

वह बैठ गया क्योंकि वह डरा हुआ लग रहा था।

वह फिर बोला, "जानते हो... मेरा फूल... मेरा कुछ दायित्व है उसके प्रति इतना दुर्बल है वह, इतना मासूम। उसके पास बेकार से चार कांटे हैं सारी दुनिया के विरुद्ध जूझने के लिए...।"

मुझसे खड़ा नहीं रहा गया। मैं बैठ गया। वह बोला, "लो! बस...!"

थोड़ा रुका वह, फिर उठा, एक कदम् आगे बढ़ा। मैं मूर्तिवत बैठा हुआ था। बस एक पीली सी रोशनी हुई उसकी एड़ी के पास। क्षण भर को वह निष्पन्द और स्तब्ध रहा फिर वह एक कटे पेड़ की तरह गिर पड़ा। रेत की वजह से आवाज़ भी नहीं हुई।

छः साल बीत गए... मैंने कभी नहीं कही यह कहानी। मेरे ज़िंदा वापस आने पर मेरे दोस्त खुश हुए थे! मैं उदास था लेकिन मैंने उन से कहा, "कुछ नहीं बस थका हुआ हूं...।"

अब कुछ सम्हला हूं पर पूरी तरह नहीं। मैं जानता हूं कि वह अपने घर पहुंच गया। क्योंकि दूसरे दिन सुबह मैंने उसका शरीर वहां नहीं पाया था। उतनी भारी नहीं था उसका शरीर... रात को मैं सितारों की आवाज़ सुनता हूं मानो करोड़ों घंटियां बज रही हों...।

लेकिन कुछ असाधारण घट गया कि मैंने जो जाबा बनाया था उसकी भेड़ के लिए उनमें मैं चमड़े की पट्टी लगाना भूल गया था। सोचता हूं—क्या हो रहा होगा वहां। कहीं भेड़ ने उसका फूल चर न लिया हो...।

कभी-कभी सोचता हूं ऐसा नहीं हो सकता। राजकुमार रात को अपने फूल को शीशे के ढकने से ढक देता होगा और भेड़ पर ख्याल रखता होगा। ...तब थोड़ी खुशी होती है और सितारों का मृदुहास सुनाई पड़ता है। फिर सोचता हूं, "कभी-कभी आदमी भूल जाता है और एक भूल काफी है। एक रात वह फूल को ढकना भूल गया होगा या भेड़ ही चुपचाप बक्से से निकल पड़ी होगी...। और फिर तारों की घंटियां आंसुओं में बदल जाती हैं।..."

कितना अद्भुत है यह रहस्य मेरे लिए, और आपके लिए भी जो मेरी ही तरह नन्हे राजकुमार से प्यार करने लगे हैं। हमारे लिए यह जानने से बढ़कर कुछ भी नहीं कि एक भेड़ जिसे हम जानते भी नहीं कहीं एक निराले से गुलाब को चर गई या वह अभी खिला हुआ हमारे नन्हे-मुन्ने का जीवन संवारे हुए है।

आसमान की ओर देखिए और पूछिए कि भेड़ उस गुलाब को चर गई कि नहीं! और देखिएगा कैसे सब कुछ बदल जाएगा।

और... और बड़े बूढ़े नहीं समझेंगे कि ऐसी बातों का कोई महत्व भी होता है।

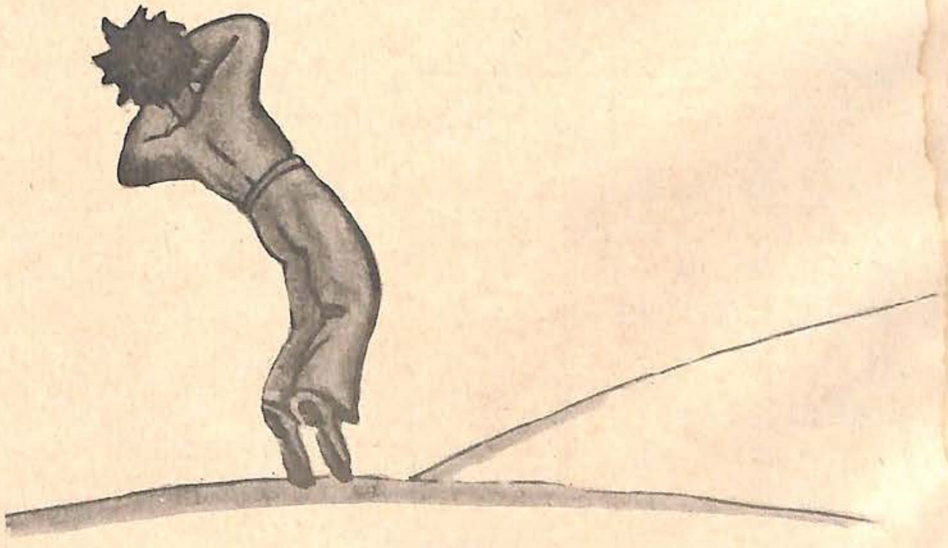

यह मेरे लिए संसार का सुन्दरतम और सबसे विवादपूर्ण दृश्य है। यह वही दृश्य है जो पहले भी देखा। पर मैंने इसे एकबार और इसलिए बनाया है कि आपको ठीक से दिखा सकूं। यहीं जन्मा था मेरा नन्हा राजकुमार इस धरती पर और फिर यहीं से विलीन हो गया।

इसे ठीक से देख लें ताकि यदि आप अफ्रीका भ्रमण पर निकले हों और रेगिस्तान में ऐसा ही कुछ दिखाई पड़े तो आप फौरन उसे पहचान लें। यदि आप को उधर से गुजरने का अवसर मिले तो मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूं वहां से यूंही गुजर मत जाइएगा। एक क्षण को तारे के नीचे इंतज़ार करिएगा। अगर कोई हंसता हुआ बच्चा आप तक आए, उसके बाल सुनहरे हों और यदि वह आपके प्रश्नों के उत्तर न दे तो आप समझ लीजिएगा कि वह कौन है और फिर मेहरबानी करके, मेरी उदासी का ख्याल करके, मुझे फौरन लिखिएगा कि 'वह' लौट आया है।

(समाप्त)

लेखक : सैंतेक्जूपेरी **अनुवाद : लालबहादुर वर्मा**

फार्म 4 (नियम 8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के संबंध में विवरण :

प्रकाशन का स्थान : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.
मुद्रक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016.
संपादक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016.

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जनवरी, 1989

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

उत्तर-दिसंबर अंक के

1. 15 स्त्रियां। और इनमें से किसी की उम्र 25 साल से अधिक नहीं है।

2.

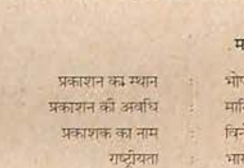

4.

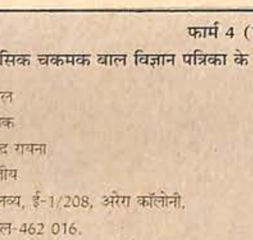

5. 120 दिन।
6. तीन घंटे तक।

वर्ग पहेली 15 : हल

बाएं से दाएं

(1) अजंता (6) फूंक फूंक कर (7) सुलह (8) तमाम (11) कारागार (12) कालापानी (13) लगन (17) निकाह (18) नर्मदा सागर (19) जलन

ऊपर से नीचे

(2) जंगल का राजा (3) मुकदमा (4) नकल (5) शरण (8) तरल (9) मकान (10) भोपाल का ताल (14) गलगल (15) वानर (16) मदारी

चित्र : मयंक श्रीवास्तव, आठवीं, कटनी

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्टार द्वारा पंजीकृत।
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/89

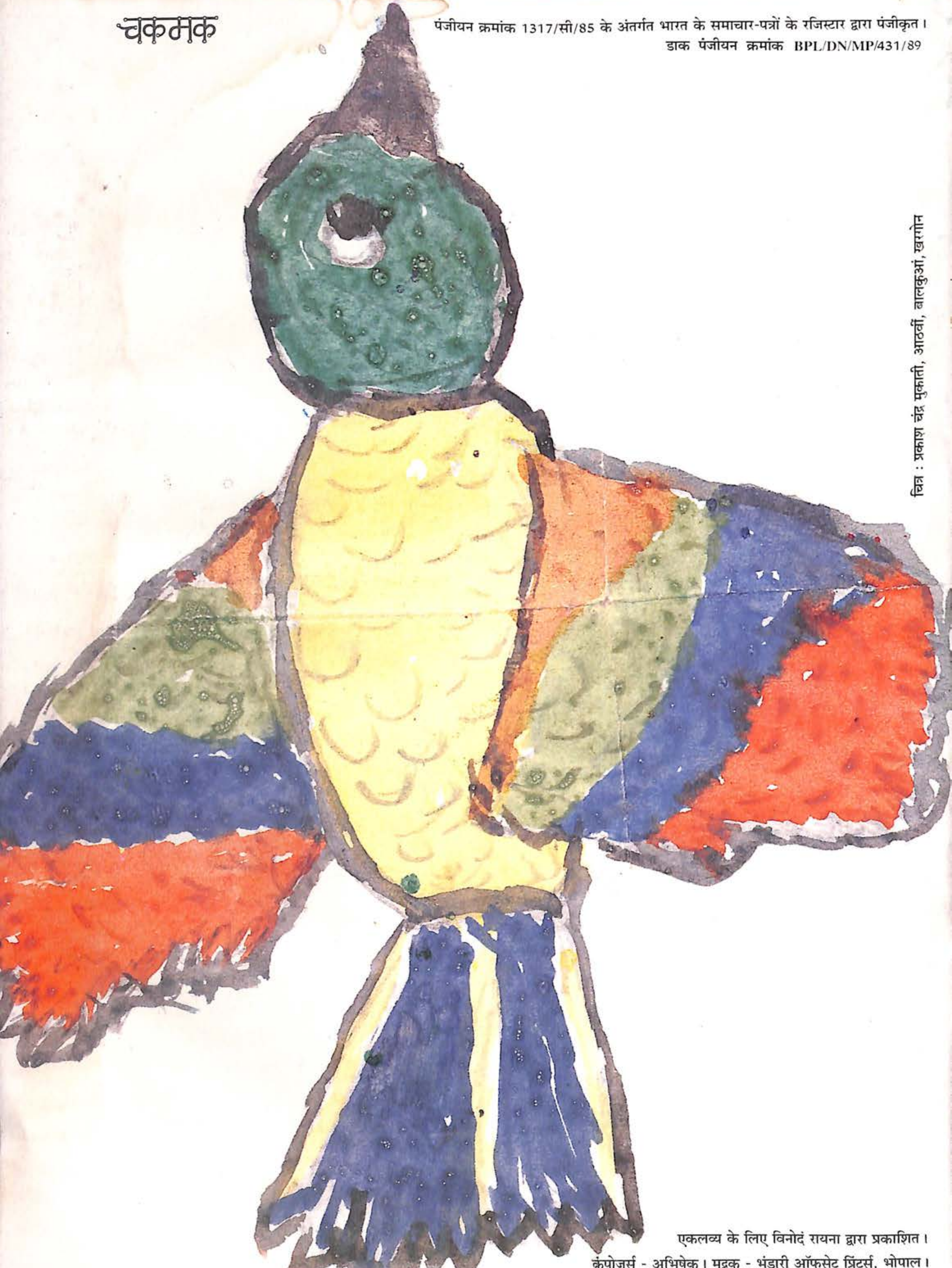

चित्र : प्रकाश चंद्र मुकाती, आठवीं, बालकुआं, खरगोन

एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित।
कंपोज़र्स - अभिषेक। मुद्रक - भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल।